

2574

श्रीगणेशायनमः॥ श्रीनृसिंहायनमः॥ श्रीसूर्याय
नमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ नमः॥ राग॥ मातव॥
सातमां॥ जयेजयेनाटेश्वरआनन्दस्वरूपहे॥ रत्नकन
कभूषितसोहे॥ सुधरकमललोचनहे॥ कमललोच
नहे॥ वगंवरसुवटिटसुन्दरहे॥ अनिरूपवहुवीर्य
श॥ शुभकान्तिधर॥ मृगछाता॥ शोभितसकलशशि
धरनहे॥ महिषानिराजकरशकलभावतसिद्धिबन्धु

शे
से

वरदावेहे॥ ॥ ॥ विष्णुयामिजं ४ लामिसा २ ह
पिहाव॥ श्लोक प्रवेश॥ नमस्ते नृत्यनाथा यशंकर
यनमोस्तुते॥ नमस्ते गुरवे नित्यासिद्धि देहि चण्डवं
॥ १॥ नृत्येश्वरं माहादेवं ढाण्डवेशं सुरेश्वरं॥ योगी
श्वरं गुरुं वन्दे नृत्यसिद्धिं च देहि मे॥ २॥ लिहाय प्र
वेश॥ मे॥ राग॥ भूपालि॥ ख॥ नारायणवैकुण्ठना
थकरनप्रवेश॥ लक्ष्मीसरस्वती गरुडै संगये॥ १॥

विष्णु ॥ अङ्क २ आदिगता लव क्षरा यथा विधा नक्त नरैः ॥ चरैः ॥

विष्णु ॥ अइए आदिगंगा सब क्षरा ह्यविश्रामकरतहें ॥ सर्वे ॥
अहो नारायणा भक्त्यविश्राम कीजे ॥

मन भरिवरदानि सत्य नारां भावान् ॥ मनय एथी
वीर विक्रमसाह ॥ २ ॥ विश्राम ॥ नारायणा ॥ अयि
प्रीयादिगंगा सब अवहमारे महिमा कहु कहन
हैं सुनिये ॥ सर्वे ॥ अहो वैकुंठ नाथ आजा किजे
विष्णु यामहि माश्लोक ॥ शुक्ल वर्ण स्वेत वस्त्रा
रत्न सन विराजितं ॥ लक्ष्मीपति महाविष्णु आगते
हं समाश्रित ॥ अयि प्रीयादिगंगा सब येना दृश

नारायणविष्णुनामहम॥ **सर्वे**॥ अहोनारायण
महाविष्णुयथाथआज्ञाकिगोहैं॥ **लक्ष्मी**॥ अहो
नारायणमहाविष्णुअवहमारीमहिमाकछुवि
नतिकरतहैंसुनीलिजे॥ **विष्णु**॥ आयिप्रीयेनुम
कहिये॥ **लक्ष्मी**यामहिमाश्लोक॥ पद्माक्षीचारु
हासीचंदनदावरदासदा॥ महालक्ष्मीनिवि
ख्याताआगतोहंसमादरात्॥ अहोनारायणम

हाविष्णुयेनादृशआफकाप्रानपियारित्त्वक्ष्मी
नामहमा॥विष्णु॥अयीप्रोयेमहालक्ष्मीनुमय
थाथंकसोहैं॥सरस्वती॥अहोनारायणामहा
विष्णुअवहमारोमहिमाकहुविननिकरत
हैंसुनितिजे॥विष्णु॥आयिषीयेनुमकारिये॥
सरस्वतियामहिमाश्लोक॥वीनाहस्तास्वेन
वशाविद्याहस्तावरप्रदा॥सरस्वतीतिविरच्य

ना आगतो हं समादरा ॥ अहो प्राणनाथ नारायणामा
हा विष्णु येनादिश आफ का प्राणा पियारि सरस्वती
नामहम ॥ विष्णु ॥ अयी दृये सरस्वती नुम यथार्थ
क सोहें ॥ जया ॥ अहो त्रैलोक्यनाथ नारायणमह
विष्णु अवहमारो महिमा कहु विनति करन हे सुनि
लीजें ॥ विष्णु ॥ अहो जयानुम कहिये ॥ जया या महि
मा ॥ श्लोक ॥ नारायण गदापाशि चतुर्बाहुं भजाम्यहं

॥ जयानामेति विख्याता आगतो हं समाहरा ॥ अहो
खैकुंठनाथमारा ॥ यशसमहाविष्णु येनाडिश आप
का जयानामहम ॥ विष्णु ॥ अहो जयानुमयथार्थक
ह्यो हं ॥ विजया ॥ अहो नारायणमहाविष्णु अवहमा
ते माहिमा कहु विनति करन हे सुनिलिजे ॥ विष्णु ॥
अहो विजयानुमकहिये ॥ विजयायामहिमा ॥ श्री
क ॥ ॥ नाक्षासनमाविष्णु वन्दे भक्त्या सदा मम ॥ वि

जयानाम विख्याता आगतो हं समादरा ॥ अहो नाराय
णमाहा विष्णु एतादिश आपका विजयानाम रुस ॥
॥ विष्णु ॥ अहो विजयानु मयथार्थक होहे ॥ गुरुडा ॥
अहो स्वामि अवहमारोमहिमा कहु अवधान कीजे
॥ विष्णु ॥ अहो वै नने ये नुम कहिये ॥ गुरुडयामहि
मा ॥ श्लोक ॥ ॥ भक्ति ना विष्णु संपूज्य केश वंशारि
ना सदा ॥ गुरुडे नीति विख्याता आगतो हं समादरा ॥ अ

हो स्वामि नारायण माहाविष्णु एताडिश आफका
भक्त गरुड नाम हम ॥ विष्णु ॥ अहो भक्त गरुड नुमय
थार्थ कह्यो हे ॥ विष्णु ॥ अइप्ये तक्ष्मी सरस्वति ज
या विजया भक्त गरुड अवहम लोक आफना वास
वैकुण्ठ मोजा ये वालिये ॥ सर्वे ॥ अहो त्रैलोक्य नाथ
नारायण मी विष्णु अवश्य विजे कीजे ॥ धर्म सर्वे वै
कुण्ठ व मे ॥ राग ॥ श्री ॥ चो ॥ सत्पुरुष नारायण वैकु

ठजाये ॥ सरस्वती लक्ष्मी सहसंग वैतनेय ॥ १ ॥

नृपराज नारायण भाव भक्तिकरे ॥ मन रस भक्ति

शुभ गति पावेरे ॥ २ ॥ प्रको ॥ विष्णु ॥ अयी एयादि

गरा सब अवहस लोक वैकुंठ मो जाये चलिये ॥

सर्वे ॥ अहो वैलोक्य नाथ नारायण अवश्य चिन्ते

जे ॥ द्विको ॥ सर्वे ॥ अहो वैलोक्य नाथ सि प्र विन्ते का

जे ॥ विष्णु ॥ अयी एयादि सब अवश्य जाये चलिये

॥ सर्वे इव गानु ॥ ॥ थन उल्का मुख मिज हं ४
मिसास ३ पिव ॥ श्लोक ॥ हा पाया गु ॥ तिहा ये प्रवे
स ॥ मे ॥ राग ॥ सारंग ॥ एक नाति गो ३ ॥ उल्का मुख
राजाना म कियो परवे स सग शा सवरो ॥ शुभ गुण क
रिपाले प्रजा लोक सवरो हर ख करे सव राज पानि
सुधार ॥ १ ॥ न्याय नीति करि पुं न्य सहित सुदरी
पुरति भूपाति मन भावे ॥ हरि हर गुह सेव जो हिम

उत्का॥ इष्ट्यादिगणासवक्षराह कवि आमकर तेहें ॥ सर्वे ॥ अहो माहाराज
अवत्य विभ्राम कीजे ॥ सर्वे विभ्राम ॥

न फल पावेरे राजधानि नृपने ॥ **२॥** उत्का मुख ॥ अ
यि प्रियादिगणासव अवहमारि महिमा कह्य कहन
हे मुनिये ॥ **सर्वे ॥** अहो माहाराज आज्ञा कीजे ॥ उत्का
मुख या महिमा श्लोक ॥ राजवंसे महाश्रेष्ठ नीतिज्ञ
नीतिपालक ॥ उत्का मुखे नि विख्याता आगतो हं
समादरात् ॥ अयि प्रियादिगणासव येनादृश उत्का
का मुख नाम राजा हम ॥ **सर्वे ॥** अहो माहाराज उत्का

सुरक्षयथार्थआज्ञाकियोहैं॥ प्रमुग्धारानि॥ अहो
स्वामिश्रीमाहाराजअवहमासीमहिमाकहुवितति
करतहैं॥ कहुअवधानकीजे॥ ५८॥ आयिप्रियेनु
मकहिये॥ रानियामहिमाश्लोक॥ प्रतिव्रताधम्म
चारिकोमलांगीसुशोभिना॥ प्रमुग्धेतीचविख्याना
आगतोहंसमादरात्॥ अहोस्वामिश्रीमाहाराजये
नादशआफकाप्राणपियारिप्रमुग्धानाममहारा

निहमं॥ **उल्का**॥ अयिप्रियेनुमयपार्थकहोहो॥
राजकुमार॥ अहोपिताश्रीमाहाराजउल्कासुखअ
वहमारोमहिमाकहुविनतिकरनेहैसुनीतिजि
ये॥ **उल्का**॥ अहोपुत्रनुमकहिये **राजकुमार**
महिमाश्लोक॥ **उल्का**सुखात्मजोधीमानवतवी
र्यपराक्रमः॥ राजपुत्रश्रुतिरत्नानाआगतौहंस
मादरात्॥ अहोपिताश्रीमाहाराजउल्कासुखये

नारुशआफकापुत्रराजकुमारनामहम॥उल्
का॥अहोपुत्रराजकुमारनमयथार्थकहोह
॥सखिपमलोचनी॥अहोश्रीमाहाराजअवह
मारीमहिमाकहुवितनिकरनहेअवधानकी
जे॥उल्का॥आयिसखिनमकहिये॥सखिपः
मलोचनीयामहिमाश्लोक॥धर्मराहेविना।स
मिसुन्दरीचारुहासिनी॥पमलोचनीनिचि

ख्याता आगतो हं समादरात् ॥ अहो श्रीमहाराज येना
इस आफू का साविप प्रलोचनी नाम रहम ॥ **उल्का ॥**
अयि सविप प्रलोचनी नुम यथाथ क सोहें ॥ **सवि**
कमललोचनि ॥ अहो श्रीमहाराज अवह मारी महि
मा कछु विनति करत है अवधान कीजे ॥ **उल्का ॥** अ
यि सखि नुम कहिये ॥ **सखि** कमललोचनी यामहि
माश्लोक ॥ सेविता भूपति पत्नी पद्माक्षी दिव्य मुने

॥ **समललोचनी** विविगता आगतो हं समादरात्

री॥ कमललोचनीतिविरघाताआगतोहंसमादरा
त्॥ अहोमहाराजयेनादृशआफकासरिवकमललो
चनीनामहम्॥ **उल्का॥** अयिसरिवकमललोचनीः
नुमयथाथरुस्योहे॥ **दिव्यमंत्रि॥** अहोश्रीमाहारा
जउल्कामुखअवहमारोमहिमाकछुविनानिकरन
हेसुनीनिजे॥ **उल्का॥** अहोमंत्रिनुमकहिये॥ **दिव्य**
मंत्रियामहिमाश्लोक॥ सुखीरमाहातेजराजनीति

विचारक ॥ दिव्यमंत्रिनि विख्याता आगतो हं समादरा
त् ॥ अहो माहाराज येनाहस आफका मंत्रि दिव्यनाम
हम ॥ ५ ल्का ॥ अहो मंत्रि दिव्य तुम यथा धुं क हो हैं ॥
राज्यपाल को तु बाल ॥ अहो श्री माहाराज ५ ल्का सु
ख अवहमारो महिमा कछु विनति करत हे सुनीति
जे ॥ ५ ल्का ॥ अहो मंत्रि तुम कहिये ॥ राज्यपाल को तु
बाल या महिमा श्लोक ॥ महानै जमहावीर नृप सेव

नतन्यरा॥राज्यपालेनिविख्याताआगतोहंसमादरा
त्॥अहोमाहाराजयेतादृसआफका मंत्रिराज्यपा
तनामहम॥**५८का॥**अहोमंत्रिराज्यपालतुमयथा
र्थकस्योहं॥**५९का॥**अयीप्रीयप्रमुग्धारातिपुत्ररा
जकुमारसाषिपस्रलोचनिकमललोचनीमंत्रिदि
व्यराज्यपालअवरगणसवअवहमलोकआफना
राज्यदर्वारमोजायेचलिये॥**सर्वे॥**अहोमाहाराजअव

स्पविजेकीजे॥थनसर्वेदं॥राज्यद्वारवंमे॥रागा॥का
 फि॥प्र॥जायचलोइल्कासुखराजरे॥सबकेमनमोइला
 सकरियेसबपरिनमिलीकरजाये॥१॥पृथिवीरवि
 क्रमनृपराज॥निजकुलराजदरवाखलियेमनरसभ
 रिभरिआजचलो॥२॥प्रको॥राजा॥अयिप्रियादिगरा
 सबअवहमलोकराजद्वारमोजायेचलिये॥सर्वे॥अ
 होश्रीमहाराजइल्कासुखअवस्पविजेकीजे॥दिकें॥

सर्वे॥ अहो श्रीमाहाराज उल्का मुखसिधु विजे कीजे॥
उल्का॥ अयिषि यादिगारा सव अवस्य जाये चलीये
॥ सर्वे इव॥ तु२॥ थन दरिद्र वासरा अलं कालं पिवम
ध्ये॥ दरिद्र॥ अहो जन वन्द अवहम भिक्षाले केष्मान क
रणो को जानहे॥ पत्ता एवं हू हाये मध्ये॥ दरिद्र॥ अहो जन
वन्द अवहम गंगा जिमे आये पुरुचे गंगा स्नान संध्या कर
तहे॥ थन विश्राम॥ गंगानये॥ स्नान भारिवं॥ थन स्तोत्र

या क॥ श्लोक॥ नमस्ते नमस्ते देवि सर्वपापविनाशिनी
॥ सर्वदुःखहृगंगे सर्वदुर्गतिनाशिनी ॥ अरीरीगंगा
देवी तुमारिचरण कमलमोकोटि २ प्रणाम अवहम
भिक्षामगनेको जान है ॥ दं ह हाय ॥ थ न वृद्ध वास
रा वनिपं ॥ प्रकोभासा ॥ अहो जन वृद्ध अवहम वृद्ध
वासरा होके दरिद्रको उपदेश देन जान है ॥ द्विको ॥
अहो जन वृद्ध अवहम सिधु जान है ॥ मध्ये ॥ वृद्ध न स्व

उह १

उह ४

यो॥ वृद्ध॥ अहो दरिद्र वासरा॥ थन दरिद्र॥ अहो पितां
महवृद्ध वासरा हमारे प्रणाम क्या आता हो न हे॥ वृ
द्ध॥ अहो दरिद्र वासरा कि सत्वा से धुर्ते फिर रहा हो
दरिद्र॥ अहो पितां महवृद्ध वासरा हमारे अभाग क
र्म हो ऐ से वहुत दरिद्र हैं भिक्षा के वासे धुर्ता हुं यो उ
ख दरिद्र छुनने को उपाय जुक्ति होत उपा कीजे॥ वृ
द्ध॥ अहो भक्त दरिद्र वासरा नमस्तु नमस्तु श्री सत्यना

उह

रायराको ब्रत करोत वनु मारा दरिद्र दुने गात वंग जा
इ फल जाइ पत्रि पिष्ट घृत उदस करामिला इ फल क
दलि फल फल सो पूजा करि वंधु लोक वोला इ कर जा
गा रां करि प्रसाद भक्षन करि नव उः ख दुने गा अव रुम
अंतर्धान होत हे ॥ वृद्ध हे स्वक ॥ वृद्ध ॥ अहो जन नृन्द
अव रुम अंतर्धान होत हे ॥ दवल वं ॥ दरिद्र ॥ अहो
जन नृन्द अव सयन काल भयो सयन करत हे ॥ थन
देने भाव खिं ॥ दने भाव खिं ॥ दरिद्र ॥ अहो जन नृन्द

अवहमनारायणवृद्धबासराकाआज्ञासोभिक्षा
इवसोश्रीसत्यनारायणकोबुनकरोकोजानहे
॥दरिद्र॥ वं॥ निपं॥ प्रको॥ वृद्ध॥ अहोजनवृद्धअं
वहमनारायणवृद्धबासराकाआगणसोभिक्षा
इवसोश्रीसत्यनारायणकोबुनकरोकोजानहे
॥दिको॥ अहोजनवृद्धअवहमसिधुजानहे॥ इव
॥लु॥ ३॥ धनसिवंजाव॥ निपं॥ प्रको॥ सिवंजा॥

अहोजन वंद अवहमल कडि विका उन जान हैं॥
दिकों॥ अहोजन वंद अवहम सिध जान हैं॥ मध्ये॥
सिवं जा॥ अहोजन वंद क्षण एक विश्राम करत हैं
॥ थन सिवं जा विश्राम॥ थन वासरा व॥ दवंत
॥ मध्ये॥ अहोजन वंद अवहम यह भिक्षा इत्य
सौ सत्य नारायण वन करत हैं॥ दरिद्र हहाय वि
श्राम॥ थन वन र्यक॥ मे॥ रागा॥ श्री॥ ये॥ सत्य नारायण
अहोजन वंद अवहम परिक्रमा करत हैं॥

२भावकरेवृत्त॥कोटिशिविनतिरुडुखसवहरा॥१॥मन
कामना२पूरकरदीजे॥द्विजराजाभयानन्दकरजोरेसरोज
॥२॥परिक्रमायाक॥दरिद्रयाश्रोक॥ ॥सत्यनारा
यणां देवं वन्दे हंकरुणानिधे॥सर्वडुःखहरं नित्यं परत्रे
च परांगतिं॥अहोश्रीसत्यनारायणानुमारेचरणकमल
मोकोटि२प्रणाम्यहदरिद्रुताशदीजेअवहमप्रसा
दभक्षकरिकेजागरामकरौंगे॥फेकतुक॥धनसिवंजा

जबस

नदा॥सिंवंजात॥अहोजननवन्दअवहमारोजनपिउनेको
इछाभइजनलषानेकोजानहैं॥प्रताखनहूहाया॥बाल
गायाकेइनेभासा॥अहोभक्तयहकौनाहोनहैं॥दरिड
॥अहोभिलुयहसत्यनागयराबनकियाकाप्रभावसे
मेरेदरिडछुनगया॥सिंवंजा॥अहोभक्तहमभिदरिड
हैंहमबनकरुंगेउपचारकरहिये॥दरिड॥अहोभिलु
फलफलकेराअपुंसावनकरियेनवदरिडछुनेगा

॥सिवंजाभिलु॥ अहोभक्तहमकरुंगेजलधानेकोद
जे॥दरिद्र॥ अहोभिलुयहप्रसादजलखायिकेजाह
॥सिवंजा॥ अहोभक्तअवस्य॥ जलप्रसादवियभाव
रिवं॥ धननिस्संदंतिहाये॥ रितिकोसं॥ सिवंजा॥ अहो
भक्तदयालुहमनेप्रसादपायाअवहमयहलकडि
विकायापिछेजौनदामआवेगासोदामसोसराजाम
लेकेवनकरुंगेअवहमजानहैं॥ हम्मरोप्रणाम॥ दारि

इ॥ अहो मिनु अवस्थ जाह ॥ सिवं जावं ॥ द्रवत्तं ॥ दरिद्र
॥ अहो जन चन्द अवह मयव पर्वकाल मेव करारो को
जात हैं ॥ इति प्रनं वं ॥ तु ॥ ४ ॥ थन वं जा लोक वनि पं
॥ प्रको ॥ नाइ को ॥ अहो भाइ अवह मलोक वजार मे
जाये चलिये ॥ द्विको ॥ सर्वे ॥ अहो नाइ को सिध जा
ये चलिये ॥ नाइ को ॥ अहो भाइ लोक अवस्थ जाये चलि
ये ॥ मध्ये ॥ नाइ को ॥ अहो भाइ लोक अवह मलोक वजा

जस

३ सर्व ॥ अहो नाइ को अवस्थ जाये चलि ये ॥

रखी के वे पाखरुंगे ॥ सर्वे ॥ अहो नाइ के अवस्य क
रिये ॥ सर्वे विश्राम ॥ थन सिवजावा ॥ दवलं ॥ मधो ॥
सिवंजा ॥ अहो वनिया लोक यहल कडिले हो ॥ नाइ के
॥ अहो भिलु यहल डिको क्या दाम कहना है ॥ थन सिमा
यखात मात को ॥ नाइ के ॥ अहो भेलु वरुन अछात क
डिसे आया यह वरुन दाम ले हो ॥ सिवंजा ॥ अहो माहाज
न लोक अवस्य ॥ राम बिय ॥ पहरिं ॥ थन सिवंजा पुसि

अनसिद्धं जावद्वलं ॥ अथो ॥ अहो जनवृन्द अवहमलकदि विद्याया काटु वा सो श्री सत्य जारा यरा को ब्रु करत हैं ॥ पल
लं हलये ॥ विश्रामा ॥ वृतया कभां ॥ भोका ॥ अहो जनवृन्द अवहमलकदि विद्याया काटु वा सो श्री सत्य जारा यरा को ब्रु करत हैं ॥ पल

नये ख्यात मात को ॥ सिव जा ॥ अहो जनवृन्द अवहमलकदि
दाम वरुत मिल गया अवय हदाम सो स राजा मले के स
त्य नाश यरा को वन करणो को जान हैं ॥ सिव जा वंद वलं ॥
नाइ के ॥ अहो वे पारि वनिया अवहमलक वे पार करि
के य हिर हन हैं ॥ सर्व ॥ अहो नाइ के अवस्य रहिये ॥ स
र्व ॥ पारि क्षयंड वं ॥ लुप ॥ धन मा हा जन मि जं सं श मि सा
सं १ अलं कालं पिव मध्ये ॥ मा हा जन ॥ अश प्रिया दि स

वगन अवहमलोकक्षणाएकविश्रामकरनहैं॥सर्वे
॥अहोसाहुकारमाहाजननअवस्यविश्रामकीज्ये॥थ
नमाहाजनसर्वेविश्राम॥माहाजन॥अश्रियेनुमसा
वधानहोकेराहियेहमलोकव्यपारकरनेकोजानहैं॥
माहाजंती॥अहोप्राननाथमहाजनसिधुव्यपारकरके
नुरंनआइएहमयहिरहनहेहमारिप्रणाम्॥माहाजं
॥अहोस्वेवकरयहधनदौलथलेकेव्यपारकररा

को जाय चालिये ॥ स्पवकर ॥ अहो साहुकार अवस्य
जाये चालिये ॥ माहाजन नि ~~सिद्ध~~ कानन ॥ अहो स्प
वकर व्यपार करने को जाय चालिये ॥ सेवकर ॥ अहो
साहुकार अवस्य जाइये ॥ माहाजन वंति पं ॥ प्रकोभा
सा ॥ हि को ॥ सेवकर ॥ अहो साहुकार सिधु जाइये ॥
माहाजन ॥ अहो सेवकर अवस्य जाये चालिये ॥ निहं
उवं ॥ माहाजं नि परिक्षेपं उवं ॥ लुद्धं ॥ उत्का मुखिराज
इति श्री स्कंद पुराणे देवावतरे सप्तमोऽध्यायः ॥ १ ॥
अमीक ॥ १ ॥ राग ~~जगति~~ ॥ अ ॥ नवनाथ नमो भ्यो नमो गलकी जे ॥ अ

भाषित

ॐ नारि तुरे न्जर सिद्धि पर दीजे ॥ १॥ जय नृपराज दधिवां एधि क्रम

सर्वे॥ अहो महाराज यह सराजा मलिइ के विजे कि
जे॥ थन पूजा सराजा मजो नाव सर्वेदं॥ पत्ता खं हे हा
यद बुद थुस॥ उल्का॥ अयि प्रियादिगारा सब अवह
मलोक भड सिला गंगा मो आइ पडुचे विधिसो सत्य
नारान् पूजा करने हे॥ सर्वे॥ अहो महाराज अवस्य
कीजे॥ विश्राम॥ वनया कभां रिवे॥ थन वं नं यां कं मे
॥ थन वनया क हे थु मे॥ श्लोक हू पाया गु॥ जव॥ फेकः

राज॥ श्री॥ वं॥ त न नाश॥

मई पूजा॥ द्रव्य पा रक्ता मा करत हे॥
सर्व॥ अहो महाराज मजस्य क रिउ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

नुका॥ उल्का॥ अहो वैकुंठनाथ सत्यनारायण हमा
रो मनोवांछित वर दिजे आ फ को चरण मे सा शो ग
परणाम् ॥ ^{अवजगाम मकर}थ न मा हा वै नि पं प्र ष को भा सा डं ॥ ^जहि को
भा सा डं ॥ मध्ये ज व स ॥ मा हा ज न ॥ अहो स्ये व कर ड
ह ज गा मे क्या हे दे ष ने हे ॥ स्ये व कर ॥ अहो सा रु वा
र अव स्य ॥ स्वय भा वा ॥ अहो महाराज ह जुरा क्य

पूजा किया क्या फल मिलेगा ॥ ५८ ॥ अहो साहुकार
माहाजन यह सत्य नारायण नाम वन है स्वर्ग का प्र
वर्षा हमारे संतान होगया ॥ माहाजन ॥ अहो राजें ५
८ का मुख हमारा भि संतान नहि सो वास्ते विधि पूर्वक
उपदेश कहिये ॥ ५९ ॥ अहो माहाजन यह स्वर्ग का
रण को विधि पूर्वक कहने हे सुन ॥ माहाजन ॥ अहो

महाराज ^{उल्का} उल्का मुख अण्ण किजे ॥ **घाहा** ॥ गोधुम
चतरंभाक्षीर सपादकरिके नाचू ॥ पूजन करो होम
क्ति सो इच्छा फल होवे सोचू ॥ **माहाजन** ॥ अहो मह
राज उल्का मुख अवहव आफ का उपदेश सै विधि
पूर्वक संतान् कि इच्छा सै सत्य नारायण का व्रत क
रो को जाने है ॥ **माहाजन वंदु निपं ॥ उल्का दि सर्व**
दं ॥ पलार वंति विये ॥ उल्का ॥ अर्घ्यिया दि गरा स

हमारा प्रणाम ॥ राजा ॥ अहो साहू अवस्य जाह ॥ माहाजन ॥ अहो
महाराज वंदु अवहव प्रणम के दोसे प्रणाम जाय दा लियो ॥ सेवा ॥ अहो

उल्का मुख अण्ण किजे

सा ३

व अवहम लोकनेवन करिके आइ पहुंचा अवहमः
लोक अंत पूर मे जाये चलि ये ॥ सवि ॥ अहमे मा हा राज
अवस्पू वि जे यो कि जे ॥ अंत पूर वं मे ॥ राम ॥ मोरी ॥ प
रि मां ॥ अंत पूर मे र से जाये चलि ये ॥ म न र स म रि भ
रि अवहम जाइ ॥ भूपति नृप गुरा स वं गा वे ॥ हरि
रा भगी कर नि न्य ह म धा वे ॥ श ॥ प्र को ॥ ५ ॥ अ यि स
पी या दि ग रा स व अवहम अंत पूर मे जाये चलि ये
रानि ॥ अइत सि अवहम लोक अंत पूर मे जाये चलि ये ॥ सवि ॥ अइ मा हा ॥ नि अवहम वि

अंत पूर मे

अंत

॥ सर्वे ॥ अहो माहाराजी अवस्य विजे को जे ॥ दि को ॥ स
र्वे ॥ अहो माहाराजी उं त्को मुं रे ॥ सि घा वि ने की जे ॥ दि
॥ अयो धी या दि ग रा सब अवस्य जाये च लिये ॥ सर्वि
वं ॥ तु ॥ महा न न नी उप रि क्षि पं पि व ॥ विश्राम ॥ थ
न मा हा ज न स्त २ पि व नि पं ॥ प्र को ॥ मा हा ज न ॥ अ से से
व कर अव ह म लोक आ फ ना मं दि ल मे जा ये च लिये ॥
स्वे व कर ॥ अ हो सा रु का र अव स्य जा ये च लिये ॥ दि
उं त्को ॥ अ हो म त्रि ग रा सब अ र न्य तो भू स्वा त ठ करि के जा ये च लिये ॥ सर्वे ॥
अ हो मा हा रा अव स्य वि की जे ॥ स न प ह लं ॥ सि को उं ॥ दि को ॥ म त्रि ॥ मि तु ॥ रा ज ॥

१
रति

अवस्य

को॥ स्पवकर॥ अहो साहुकारसिषु जाये चतिये
॥ माहाजन॥ अहो स्पवकर अवस्प जाये चतिये॥ म
धो स्वयभावरिं॥ माहाजन॥ अयि प्रिये महाजन
नीदं॥ माहाजननी॥ अहो प्राणनाथ हमारी प्रणाम
॥ या हांसन मो विजे कीजे॥ महाजन॥ अयी प्रीये
अवस्प॥ निहंष लाखन ह्य हाये नापं विश्राम
॥ महाजन॥ अयी प्रीये हम वे पाखरने को ग

याथा सो वरवत मे डल्का मुखराजाने संतानला
भहो नेका सत्पनारायण वन डपचारक हा सो व
नहमने भिसंतान् होने सों करुंगे ॥ महाजननी
॥ अहो प्राणनाथ इह वार्ता भलिहें ॥ महाजन
॥ अहो स्पवकर यहरत्नसार सहका वगार मेघी
लेके आव ॥ सेवकर ॥ अहो साहुकार अवस्प ॥ से
वकरदं ॥ पलाख हहाय ॥ सेवकर ॥ अहो जनस्व

॥ अ व ह म घी ते ने को जा त हो ॥ छ नि प न वं ॥ मा हा
ज न ॥ आ यि प्री ये ॥ त्वा हा जो ना व नि स्त दं ॥ प त्ता ख वं ह
हा य ॥ मा हा ज न ॥ आ यि पि नु मा शी र ति जो भ न दे ष
के मे रे म न चं च त भ यो अ व ह म क छु क रु न हें सु
नी ये ॥ मा हा ज न न ने ना त जो ने ॥ मा हा ज न नी ॥ अ
हो प्रा न ना थ गु ना रि श्छा ॥ मा हा ज न नी न मा हा ज

नया लाहाज जो नाब नो लनु के ॥ धन प्रहसोति
 शृंगार मे ॥ राग ॥ वलारि ॥ चौ ॥ सुन सुन सुनरी
 पृष्ठ मेरे वान् ॥ हिम जै साने रि कुच अनिरस पा
 वे करे हम खे लुरे ॥ १ ॥ सुनने रि मन की रनिका
 म पूरये ॥ परजन को हिन हिम नरस भरि कर नृप
 राज गुण गावे ॥ २ ॥ माहाजन नी ॥ अहो प्रान नाथ
 अवह मा रिवि नति सुनीये ॥ माहाजन ॥ अयी ॥ ३

येनुमकहीये ॥ स्त्री **उक्ति शृंगास्त्रे** ॥ रागा ॥ व्याहा
 गरा ॥ **तं** ॥ सुनपतिरतिरसदात्रकरो ॥ जोरि करह
 नउनकरि पेहो संगरस भरि रिनुदान ॥ **१** ॥ नृप
 राज पृथिवीर विक्रम साह ॥ परम रिनुसको सि
 सु करि दीजे कृपा कर दयादान ॥ **२** ॥ अहो पानना
 थह मारी अपराध क्षमा कीजे ॥ **महाजन** ॥ अयो
 प्रिये नुमारी जो भनरति कदा सो संजुष्ट भयो नुमः

फिक्किमन्करिये अवहम दोनो क्षण येक विश्राम करनः
हैं ॥ माहाजननी ॥ अहो प्राननाथ अवस्य ॥ धनमध्वे निहं
विश्राम ॥ धनसेवकर विनिप ॥ प्रकों ॥ अहो जन वंद अव
हम घीले के साहुकार का पास जान हे ॥ दिकों ॥ अहो ज
न वंद सिधु जान हे ॥ जवस ॥ सेवकर सोय ॥ सेवकर ॥ अ
हो साहुकार हम घीलिये के आया हे लिजिये ॥ हमारे कु
र्तोस् ॥ माहाजन ॥ अहो सेवकर अवस्य नमय हा आम्हः

करहिये॥सेवकर॥अहोसाहुकारअवस्य॥सेवकरह्यह
यनापविश्राम॥माहजन॥अयीप्रियादिगरासवअव
हमरत्नसारपूरमेवजारखकरमहिर्नहै॥सर्व॥अहो
साहुकारअवस्यरहिये॥सर्वपरिछिपंडव॥नृश॥थनदास
शौनकादिअलंकारपिवं॥मध्ये॥शौनक॥अहोअबिलो
कअवहमलोकनैमिषारणवनमेनपकराकोजाये
चलिये॥नयस्वी॥अहोशौनकअवस्यविजेकोजे॥प्र

कोंभासाडां॥दिकों॥नयस्वी॥अहोशौनकसिधुवि
जेकीजे॥शौनक॥अहोअषिलोकअवस्यजायेवली
ये॥सर्वेडुवं॥लु३॥थनसूतसं१दाससं२अलंकारं
पि॥मध्ये॥सूत॥अहोदासलोकअवहमलोकगंगा
जिमेस्नानकरणकोजायेचलिये॥दास॥अहोसूत
जिअवस्यविजेकीजे॥पलाखंसहाय॥गंगानये॥सू
त॥अहोदासलोकअवहमलोकगंगानिकट

आई पड़ु च गंगा स्नान करत हैं ॥ दास ॥ अहो सूत जी भ
वस्य ॥ स्नान या क भंखिं ॥ प्याल माल को ॥ श्लोक ॥ हरि
गंगे महेशानं पा पखंदन कारक ॥ भुक्ति मुक्ति परंदाता
गंगा देवी नमाम्यहं ॥ दास या श्लोक ॥ हे गंगा छिन जिन
याना अति भक्ति रसनं छिनं जिन वियनेल अतिवान
लाकस्त ॥ त्यास्य कलानयनयनियसिने दय कनाई
हुं त्यास्य नगाछस्त अनियव वियनेल छिन ॥ स्वस्त्यां ॥

अरीरीगंगादेवीहमारीकोठि२सास्तांगप्रणाम्॥सूत
॥अहोदासलोकअवहमलोकनैमिसारणपवनमो
जायेचलिये॥दासौ॥अहोसर्वज्ञसूतअवस्यविजे
कीजे॥३संदंतिहायमध्येभासाडं॥तिपंवं॥प्रकोडं॥दि
कों॥दासौ॥सर्वज्ञसूतसिधुविजेकीजे॥सूत॥अहो
दासलोकअवस्यजायेचलिये॥सर्वेडवं॥तु३॥धन
माहाजनउपरिक्षिपंपिविविश्राम॥महाजननी॥अ

होस्वामिहमारीशरीरमेवहुनपीडाभयाउपकारिवो
लाइजीजे॥माहाजन॥अयीएयेअवस्य॥माहाजन॥
अहोस्यवकर॥धनसेवकरदंष्ट्रहाय॥सेवकर॥अहो
साहुकारकिमुक्तं॥माहाजन॥अहोसेवकरउपका
रिवोलाश्ये॥सर्वे॥अहोसाहुकारअवस्य॥सेवकर
तिस्वये॥सेवकरपत्तारंष्ट्रहाय॥सेवकर॥अहोउप
कारीनुमइहांआश्येआश्ये॥तिहायजवसविश्वा

म॥दिदिबुढावा॥तिपं॥प्रकों॥बुढा॥अयीपुयेउपक
रिअवहमलोकमाहजनकेपाशजायेचलिये॥दि
दि॥अहोस्वामिअवस्यजायेचलिये॥दिको॥दिदि॥
अहोस्वामिसिधुविजेकिजे॥बुढा॥अयीपुयेअव
श्यजायेचलिये॥मभ्येजवसस्वय॥बुढाबुढि॥अ
होसेवकरसाहेवहमारीप्रणाम्॥सेवकर॥अयीउप
कारिमाहजनकेपासवलो॥बुढाबुढि॥अहोसाहे

३५। ३। ३५। ३५।

व अवश्य ॥ सर्वना पं ह हाये ॥ सेव कर ॥ अहो साहुः
कार ॥ उपकारिते कर आये प हुं चे ली ज्ये ॥ मा हा जन
॥ अहो सेव कर अवश्य ॥ मा हा जन ॥ अयो उपकारी
हमारी पियारी को क्या भंड देषिये ॥ बुढा बुढि ॥ अ
हो साहु मा हा जन अवश्य ॥ धन बुढा बुढि निस्स
नं ना डिखये ॥ ख्याल माल को ॥ दि दै ॥ अहो साहु य
ह साहु नी को बाल ख पैदा होने को उदर वे था हे आ

फल्लोकनीचेरहिये ॥ माहाजन ॥ अयी उपकारि अव
 स्प ॥ माहाजन ॥ अहो सेव करनीचेरहने जाय चलि
 ये ॥ सेव कर ॥ अहो साहुकार माहाजन अवस्प ॥ निरं
 दनापला खजव सहहाये विश्राम ॥ धनमचावु ये क
 मे ॥ राग ॥ पिशास ॥ चौ ॥ भुंदरिवाल कइह जन्म करे
 ॥ भुभगुणा भाग्यमानि रूप वात्त खपावे ॥ १ ॥ गुरुभ
 जन करी पैदा करावे रुमने ॥ नृपराज भूपति पृथि
 वीर विक्रम साह ॥ २ ॥ प्रको ॥ श्रीनारायण कोना

मतीदिनप्रतिमैलेलीकनरहाकेनयसोफासा
अनिडःखगरीप्येनइषयो॥ छोराछोरीपाऊन
अनिकनगरीवेथर्दोषयो. नाहकषातामाधैसिनः
सुनियनिफजितभयो॥ १॥ बुद्धिथथायाया॥ दिकों॥ ह
पावेसवेलेमिजंस्वये^धथुषेजोनेअनीभनमाल
॥ कोथाचोनवनेतिनुतीकेमालमिजंतोनेमफुलासा
दकोसंका॥ थनख्यालमालकोमचाकायस्वये. ख्या

सकौ मूये मालको ॥ माहाजन या नय न मचा के ने ॥ दि
दि ॥ अहो साहु माहाजन य हवाल कपेडा भयो देखिये
॥ माहाजन ॥ अयी उपकारी ॥ अचस्प ॥ माहाजन ॥ अयी
उपकारिय ह सुलाक्षिणि वाल कपेडा कियो धन्यनुमा
रि पराक्रम य हवाल खवेन विनिको न हे कहिये ॥ दि
दि पाषाण मालको ॥ अहो वडे साहु वेढि जानिये कर
कर्म कराय्ये ॥ साहु ॥ अयी उपकारिनु मय ह माई के

गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
गणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

2574

मापीतयोः लाइयोः सिव कर्दः। सिव॥ अहो महाजन अवस्य॥ हहा ये मध्ये॥ अहो मापीत तु
हिहा ये मये विश्राम॥ नो कति पप्रको॥ नो॥ अहो मापीत साह कपोल वलि यो॥ नो नो॥
रहीये॥ दिदिव ला॥ अहो साहुकार अवस्य॥ थन पला
खं लिहाये माहाजन नीव नापं विश्राम॥ माहाजन॥ अहो
स्य वकर गुरु प्रोहित जो निष वोलाइये॥ स्य वकर॥ अ
हो साहुकार अवस्य॥ स्य वकर दं पलाखं होहाये॥ मध्ये
स्य वकर॥ अहो गुरु नाथ जो निष पंडित नुम लोक यः
हा आइये आइये॥ पलाखं लिहाये नापं विश्राम॥ थ
न जो निष व्रतियं॥ प्रको॥ जो निष॥ अहो दास लोक न

मआइय
महोनापी
तअक्य
मायेचलि
ये॥मके॥
नापीत॥अ
हेराकमा
राप्रगासु
माहु॥अइ
नापीतसु
तकीनअ
कसपुन
नकरिये

जमानमाहाजनकेपासजायेचलिये॥दास॥अहोपं
डितजोनिषअवस्यविजेकीजे॥दिको॥दास॥अहो
पंडितजोनिषसिधुविजेकीजे॥जोनिष॥अहोदास
लोकअवस्यजायेचलिये॥मध्वजनवसस्वयेभाव॥जो
निष॥अहोजमानसाहुकारसर्वत्रशुभानिसंतुह
मकोक्यावास्तेवोलाया॥माहाजन॥अहोगुरुप्रोहित
जोनिषिपंडित॥हवालखपैडाभयातग्रविचारक

नकारज
जापीता॥अ
होसाहुज
वस्य॥सं
वाके॥हा
माहा॥अहो
जापीतबन
लेकेगाह॥
अहोसाहु
अवस्य॥ने
वसे॥अहो
साहु॥अहो
सर्वकार॥

रिजे॥ जो निसि॥ अहे जमान साहु अवस्यारिषिपि
पलारं ह्यहाये विश्राम॥ जो निस॥ अहो दास लोक अ
वहम लोक प्रसन करहे॥ दासो॥ अहो पंडित जो निसि
सि अवस्य करिये॥ जो निसि न त्याषवोय भांरिवं॥ जो
निसि पंचांग निथि वारं च कर्ण योग समं न्वितं॥ ग्रह
कण्डल नक्षत्रं जन्म प्रसन्न करोम्यहं॥ ३ स्रदं॥ सिहाय
॥ जो निस॥ अहो यजमान साहु यह कंन्या वहुन सुत

क्षरा को बाल कहें यह जनम पत्रिका लाजे ॥ मा हा ज
न ॥ अहो गुरु अवस्य इहासन मो विजे को जे ॥ जो ति
सि ॥ अहो यजमान अवस्य ॥ जान विषय भाखिं ॥ थन
ना पं विश्राम ॥ मा हा ज न ॥ अहो गुरु नाथ यह बाल क
को नु हा ए न नाम करण करि दी जे ॥ जो ति सी ॥ अहो य
जमान साहु अवस्य ॥ जो ति सि ॥ अहो दास लोक यज्ञ
तयार करो ॥ दासौ ॥ अहो पंडित जो ति सि अवस्य ॥

यत्नजज्ञदयकुमांरिंवारत्पालमालकौ॥दासौ॥अहो
पांडितजोतिसयज्ञतयारभयो॥जोतिसि॥अहोदास
अवस्य॥जोतिसि॥अहोयजमानसाहुयज्ञसराजा
मलेकेहोमकराजाइये॥माहाजन॥अहोगुरुनाथ
अवस्य॥माहाजन॥अहोसेवकरसराजामलेकेव
लो॥सेवकर॥अहोसाहुकारअवस्यवतिये॥सर्व
दंरहायमध्यविश्राम॥जोतिसि॥अहोसाहुअवहो

मकरहूँ॥ माहाजन॥ अहोगुरुनाथ अवस्य करिये
॥ थनयज्ञयाकभांखिं॥ जोतिसि॥ अहोयजमानक
माकरिये॥ माहाजं सर्वे॥ अहोगुरुनाथ अवस्य॥ स
र्वेदं॥ परिक्रमायाकमे॥ ॥ राग॥ मंगल॥ चौ॥ नु
हारामकरेहमने॥ यशस्थापनवृहिरौमघनेनित
जवआदि॥ १॥ कलावतिनामकरे॥ गायनपप
थिवीरविक्रमसाहदेव॥ २॥ जोतिसि॥ अहोय

वीर

जमान अव पूर्णा करत हैं ॥ माहाजनी ॥ अहोगुरु
नाथ अव स्प करिजे ॥ जोति सि श्लोक ॥ इस्कति उ
गति पाप उस्कर्म कर्म जं फल ॥ काम को छदिकं
सर्व पूर्ण हो मंजु हो म्पहं ॥ जोति सि ॥ अहो यजमा
न साहु अव यज्ञ हो चुका अव नु माए पुत्री की ना
म कलावति नाम हो इके परब्याति होत हैं ॥ माहा
जन ॥ अहोगुरु नाथ वहुन भारि भइ यह दक्षिणा

तिजो॥जोतिसि॥अहोयजमानअवस्य॥**दक्षिण**
वियभारिं॥जोतिसि॥अहोयजमानअवहम
नहंसर्वानि सुभोदयोस्तु॥माहाजन॥अहोगु
नाथअवस्य॥विजेकीजेअमारोपरणाम्॥जोति
सि॥अहोदासलोकजायचलिये॥दासो॥अहोप
डिनजोतिसिअवस्य॥विजेकिजे॥थनमाहाज
नसेवकरतिहायमाहाजननीनापविश्राम॥

जोति
प्राप्त
विश्राम

जो निसि बंधु निपं ॥ मा हा जन् ॥ अयी उपकारी यह वाल
 क को नादना करिये ॥ दिदिवुछा ॥ अहो साहु का समा हा
 जन् अवस्य ॥ थन दिदिवुछा दं ॥ दिदि ॥ अयी साहु नीय
 ह वाल क नादना करन है ॥ मा हा जन् नी ॥ अइ उपकारि
 अवस्य ॥ मचा जो नेह स्वये ॥ राग ॥ सांसा ॥ पतिमं ॥ च
 लियै वाल क धीरे धीरे आज ॥ मन रस भरि भरि खिलि
 खलि आज ॥ १ ॥ चलिये ॥ नृपवर भाने ॥ पृथिवी रवि

क्रम॥सि सुकालवालकवाइवाइआज॥२॥दिदि॥अ
होबुछाअवहमयहवालकनादनाकरनह॥बुछा॥
अयापयकारिये॥बुछा॥अइपयेसिशुनादनाकरिये
॥दिदि॥अहोबुछाअवस्यकरनेह॥रवातमातको॥दि
दिबुछालिखये॥बुछाबुछि॥अहोसाहुकारयहवालक
नादनाभयोलीजे॥माहाजन॥अइउपकारिअवस्ययह
षचलेकेजाह॥दिदि॥अहोसाहुमाहाजनअवस्यहमा

री प्रणाम ॥ दां विय भां खिं ॥ दाम काया वर व्याल मां ल मां ल
को ॥ दिदि ॥ अ हो वु छा स्वा मी भा म्ना स कान मो जा ये
च लिये ॥ वु छा ॥ अ इ प्ये अव स्य जा ये च लिये ॥ छ ति प
तं वं ॥ मा हा जं नी ॥ अ हो स्वा मि श्री स त्प नारा य रा गो व
त भा ष ल कि या था सो करिये ॥ मा हा जं ॥ अ इ प्य य रु
क त्या को वि वा रु स म ये भ यो व्र हां पि छे करौ गे वि वा रु
के वा स्ते वर को त ला स कर न हें ॥ मा हा जं नी ॥ अ हो स्वा

मी अवश्य करिजे ॥ माहाजं ॥ अहो सेव करनु मजा इके सु
न्दर को न लास करी आह ॥ सेव कर ॥ अहो साहु अव
स्य ॥ सेव करदं ॥ पत्ता खं हहाये ॥ सेव कर ॥ अहो जन व
न्द अवहम सुन्दर को न लास करणो को जान हैं ॥ दवलं
वं ॥ माहाजं ॥ अइ पूये सेव कर को समाचार बुझि कर
यहिर रहन हैं ॥ साहु नी ॥ अहो स्वामि अवस्य रहिये ॥ थ
न सर्वे परिछि पंडुवं ॥ लु ॥ ॥ इति श्री स्कराऽपराशो

आरति

रेवारवराडे सत्यनारायण बुनो पारव्या ने कौटुक नाटके
सर्वे द्वितीयांका ॥ २ ॥ धननादि मे ॥ राग ॥ राग विजय ॥
चौमां ॥ वागेश्वर सरस्वती जोगिनी विजेश्वरी विनति
वरणामे भगति ॥ कोटि २ अमंगल शांति करण हगति
॥ करन दिज वर अभयानंद भगति ॥ हरिये काल मे
रोडर गति ॥ २ ॥ धन वंजात अखं ~~करि~~ पितृ विश्रामन
वस ॥ धन सेव कर पितृ निपं ॥ प्रको ॥ सेव कर ॥ अह
जन हृद अवहम वरन तास कर्त धुर्त्त फिर्त्त नहि वरण

या अवकांचन नगर मो जान हैं ॥ द्विकों ॥ अ हो जन वन्द
अवहम सि प्र जान हैं ॥ मध्ये ज व स स्वय भाव ॥ से व कर
॥ अ हो वानिया लोक य ह वाल क कि स्का हैं क हिये ॥ ना
इ क्का ॥ उ हा ॥ हे मा हा पुरुष हो को ना देश सो आय हो नु
म को ना देश जा वे हो ॥ नु मा रा ना म नु मा रा वं स को ना
काम कहिये ॥ से व कर ॥ उ हा ॥ हे व शिष्या हो ह मा रा वं
स मा हा जन से व ना म ह मा रो व हि ॥ रत्न सा र पू र से आ

आज
विवाह किवर खोजन ॥ नाइके ॥ हे माहाजन होतु मा
री मन की बात सुनिलिये यह सुंदर बालक जो गपहे ॥
लेकर जा रहु मने दीयो मन की कपट छोद ॥ अहो मा
हाजन सेव कर रह सुंदर बाल भि माहाजन पुत्र है लेव
र जाइये ॥ सेव कर ॥ अहो माहाजन यह बालक हम ले
जाउगे ॥ नाइके ॥ अहो सेव कर अवस्य ॥ नाइके ॥ अहो

बालकुमारयहसेवकरसोनुमजाह॥ बालकुमाराअ
होपितानाशकेअवस्य॥ बालकुमारदं॥ निहंतापंचे
॥ लिहायेमध्य॥ सेवकर॥ अहोबालकुमारअवरुम
लोकरत्नसारपूरमेविवाहकराकोचलिये॥ बालकु
मार॥ अहोसेवकरअवस्यचलिये॥ द्रवतं॥ नाशके
॥ अहोवनियालोकअवरुममातषरितकराजाय
चलिये॥ वनियासर्व॥ अहोनाशकेअवस्यचलिये॥

छनिपंगलु१॥थनमाहाजंडपरिंपिविविश्रामा॥से
वकरकुमारवनिपं॥प्रकोंडं॥दिकों॥कुमार॥अहोसे
वकरसिप्रचलिये॥सेवकरा॥अहोवातकुमारअवः
स्पचलिये॥मध्वे॥स्वयेषिं॥सेवकरा॥अहोसाहुका
रयहसुन्दरवरत्तेकेकांचनपूरसेंआयेपहुंचेवोलाश
ये॥माहाजन॥अहोवातकुमारसेवकरयहाआशः
केरहिये॥सेवकुमार॥अहोसाहुकारमाहाजनअ

बाजा लोक

वस्य ॥ निहंन पंविश्राम ॥ माहाजन ॥ अहो सेवकर
जो निसि प्रोहि न वोलाइये ॥ सेवकर ॥ अहो साहुकार
माहाजन अवस्य ॥ सेवकर दं ॥ हू हाये ॥ सेवकर ॥ अ
हो जो निसि प्रोहि न नुम लोक इहा आइये ॥ तिहाये
ना पंविश्रामं ॥ धन जो निसि दासव ॥ निपं ॥ प्रको ॥ अ
हो दास लोक माहाजन के पास जाये चलिये ॥ दासो
॥ अहो पंडित जो निसि अवस्य विजे कीजे ॥ दिकों ॥ दा

जो पिलोक

सौ॥ अहो पंदित जो निसि सिधु विजे के॥ जो निसि
॥ अहो दास लोक अवस्य जाये च लिये॥ मध्ये॥ श्वाः
मेधिं॥ जो निसि॥ अहो जजमान सर्वा नि सुभो दये
सु॥ मा हा जं॥ अहो गुरु नाथ हमारे पुत्रि कलावति
को विधि सो विवाह होम करि दीजे॥ जो निसि॥ अ
हो यजमान अवस्य॥ जो निसि॥ अहो दास लोक य
ज्ञ मंदप नयार करिये॥ दासौ॥ अहो पंदित जो निसि
अहो गुरु हमारे पुत्राम इह स नमो विजे कीर्ते॥ ७॥ अहो जजमान अवस्य॥

निसि सिधु

अहो ते वक्रवाग्रा लो कवो ला ईये ॥ मे ग ॥ अहो सा ऊ जा ॥ अ व
स्व ॥ ते व मे दे ह ह म से व के ॥ अहो वा ग्रा लो क ते मे व हा ओ ई ई ॥

सि अवस्य ॥ दा स नि हं दं ॥ ह हा य ॥ दा स ॥ अहो भा
इ य ज न या र कर न हं ॥ दा स ॥ अहो भा इ अवस्य क
रिये ॥ थ न य ज द य के भा षिं ॥ रत्ना ल माल को ॥ दा सौ
ह हा यो ॥ दा सौ ॥ अहो पं दिन जो ति सि य ज मं द प न या
र भ यो ॥ जो ति सि ॥ अहो दा स अवस्य ॥ जो ति सि ॥ अ
हो य ज मा न हो म मं ड प मो जा द्ये ॥ मा हा जं ॥ अहो
गु रु ना थ अवस्य ॥ मा हा जं ॥ अहो ये व द र य ज स र
लि ग य न पं वि श्रा म ॥ जो गि त व प ह ल ॥ न ध्ये ॥ जो गि त ॥ अ
पि ला कु दार ह मा रो प्र रा म ॥ मे हा जं व ॥

बजा लोक

जामलेकेयसमंडपमोजायेचलिये॥सर्वे॥अहोसाहुका
रमाहाजनअवस्यविजेकीजे॥सर्वेदंहहाये॥विश्राम॥
जोतिसि॥अहोयजमानअवहमहोमकरनहै॥माहाज
न॥अहोगुरुअवस्य॥थनहोमयाकभाखिं॥जोतिसि
॥अहोयजमानकन्यादानकोलगनभयोकन्यादानक
रिये॥माहाजं॥अहोगुरुअवस्य॥थनकन्यादानमामन
इधाराहायकभादमाहाजननकन्यायालाहानजोने॥
माहाजं॥अहोगुरुनाथअवकन्यादानकराइये॥जो

निसि॥ अहो यजमान अवश्य करिये॥ कुमारिया लाहाः
धिमेंतय॥ जो निसि॥ इमांकं न्यामया दत्त तुभ्यं कस्त्या न
दायकं॥ अतीवर मणी यत्वं कृपां कुरु दयानिधे॥ अहो
जामातु यह कं न्यातु मको दिया अवहम कंकन बंधन क
रनहे॥ अहो गुरुनाथ अवश्य॥ जो निसि॥ गौरी शंकरयो
प्रीति नंदि शंकरयो र्यथा॥ मित्र बंधु यथा प्रीति तथा भूः
या सदा नव॥ अहो जामातु नु मारी प्रीति दृष्टि होहे॥ अवप

तो दत्ते लाहात ३ कुमार

काहिने ३

रिक्ताकारिये॥सर्वे॥अहोगुरुअवस्यकरिजे॥सर्वदं॥
 मे॥राग॥मंत॥चो॥यज्ञकरेहमविधिलें॥यज्ञथापन
 वृद्धिहोमघृततिलजवआदि॥१॥कलावनिनामक
 रहे॥गायोत्रपृथिवीरविक्रमसाहदेव॥२॥जोनिमि
 ॥अहोयजमानअवपूर्णकरनहै॥सर्वे॥अहोगुरुनाथ
 अवस्यकीजे॥श्लोकहापायागु॥माहाजं॥अहोगुरुना
 थअवयहदक्षिणातीजे॥जोनिमि॥अहोयजमानअ

जोगी तल वेधा वाजं था लाख्या ल मालको ॥ प्राहा जं ॥
अहा वाजि लोकि यह सब ले के जाह ॥ जोगी ॥ अहि प्रा

अहो वाजि लोक यह सब लेके जाह ॥ जोगि ॥ अहो मा हा जो सब ह

हमारे पुण्य ॥ ते सिद्धि सिद्धि ॥

अलंकारसंयोजन

रुणेहानिजानिकरयहिरुनहें॥सर्वे॥अहोसाहुकारमा
हजनअवसरहिये॥सर्वेपरिक्षेयंडुवं॥नुशाथनचड
केतुमिजंस्तं४मिसास्तं३॥~~यकेन~~॥श्लोकहायायागुंलिश्वक
प्रवेसमे॥राग॥रामकलि॥रव॥श्रीजयचडकेतुनृपराजह
रषितकरप्रवेस॥भनयभगतिनेमेरोमन~~पूरण~~फटिति
वरहमपावे॥१॥नेपालकिभूपतिनृपवरभानेपृथिवी
रविक्रम॥परजनमारिकराजधानकपजनतनराजवज

श्रीजयचड १२

रुते

रुते

वे॥ **शाचडकेतु॥** अईपयादिगारासवअवहमलोक
क्षरायेकविश्रामकरतहें॥ **सर्वे॥** अहोमाहाराजअव
स्यविश्रामकीजे॥ **सर्वेविश्राम॥ चडकेतु॥** अईपयादि
गारासवहमारोमहिमाकछुकहनहेसुनिये॥ **सर्वे॥**
अहोमाहाराजअवस्यआगफकीजे॥ **चडकेतुयाभहि**
माश्लोक॥ देववाहारागोपालराजनीनिषुसेविना॥ **च**
डकेतु निविष्पानाआगनोहंसमादरान्॥ **अईपया**

दिगंगासवसनादसचन्द्रकेतुनामहम॥सर्व॥अहोमा
हाराजचन्द्रकेतुयथार्थआग्याकियोहै॥रानि॥अहो
स्वामिअवहमारीमहिमाकछुअवधानकीजे॥चन्द्र
केतु॥अईप्येनुमकहिये॥पूर्णचन्द्ररानि॥महिमा
श्लोक॥राजीवलोचनीरानीराजपत्नीपतिव्रता॥पूर्ण
चन्द्रेतिविरब्धानाआगतोहंसमादरात्॥अहोस्वामि
माहाराजयनादसआफकापियारिपूर्णचन्द्ररानिना
महम॥चन्द्रकेतु॥अईप्येपूर्णचन्द्ररानीनुमयथार्थ

३

कह्यो हैं॥ **मंत्रि**॥ अहो माहाराज अवहमारो महिमा क
हु विनाति करत है सुनितीजे॥ **चउ**॥ अहो मंत्री नु म
कहिये॥ **मंत्रिया महिमा श्लोक**॥ नीतिस्ताराज कार्य
प्रसर्वत बुद्धिमान् सदा॥ कार्य चंषेति विख्याता आग
तो हं समादरात्॥ अहो माहाराज चउ के नु पता दसः
आफ का मंत्री कार्य चंखना मरुम॥ **चउ**॥ अहो मं
त्रि कार्य चंखनु मय थार्थ कह्यो हैं॥ **राज कुमार**॥ अ

होपिनाअवहमारोमाहिमाकछुविनतिकरतहेसुनी
लिजे॥च५॥अहोपुत्रनुमकहिये॥तेजवाहंमाहावी
रनवपुत्ररतिपय॥सुखीरेतिविराजनाआगजोहंस
मादरात्॥अहोपिनामाहाराजएनाहसआफकपु
त्रसुखीरराजकुमारहम॥च६॥अहोपुत्रसुखीरनु
मयथार्थकसोहैं॥उ०चिंरव॥अहोमाहाराजअव
हमारोमाहिमाकछुविनतिकरतहैंसुनितीजे॥च

३

३॥ अहोमंत्रिनुमकहिये॥ बुद्धिचंखयामहिमाः
श्लोक॥ राजकार्यं नीतिराज्ये धर्मराष्ट्रानि पातिता
॥ बुद्धिचंषानिविख्याता आगतो हंसमादरात्॥ अहो
महाराज एतादृश आपका मंत्रिबुद्धिचंखनामरु
म॥ चंड॥ अहोमंत्रिबुद्धिचंषनुमयथार्थकस्यो
हं॥ नारासखि॥ अहो महाराज अवहमारोमहि
मा अवधानकीजे॥ चंड॥ अइसा षिनुमकहिये

॥श्लोक॥दिव्यरूपीसिनकांतिचारुहासीसुसोमिनी॥ना
रनामतिविख्याताआगतोहंसमादरात्॥अहोमहाराज
एतादृशआफकासरितारानामहम॥चड॥अइसरि
तुमयथार्थकह्योहें॥चडवतीसखि॥अहोमाहाराज
अवहमारोमहिमाकछुअवधानकीजे॥चड॥अइस
खितुमकहिये॥श्लोक॥पूर्णेन्दुवदनाभासाराजीवचाश
सुन्दरी॥चडवतीतिविख्याताआगतोहंसमादरात्॥अ

होमाहाराज एताहस आपका सरिचुवडवनी नामहम
चड ॥ अइसषीनुमयथार्थकहोहैं **चड** ॥ अइपुयपू
राचिडमंत्रिकाप्यंचषवुद्रि वंनपुत्रसुखीरनाराचड
वनी अवहमलोकनिजराजद्वारमोजायेचलिये ॥ स
र्वे ॥ अहोमाहाराजचडकेनुअवस्पविजेकीज्ये ॥ **सर्वेदंरा**
जदवावंआनन्दपैसारमे ॥ राग ॥ पज ॥ **प्र** ॥ जायराजराणी
होसवजना ॥ राजगणसवसंगहरषवढाइयेनिजकुल

नीजिराजको॥१॥जाय॥एथिवीरविक्रमसाह्मने
॥सबनेसरसकरीनीतिविचालधरिकपटविजननक
रिये॥२॥जाये॥५को॥चड॥अइएयादिगरासबअ
वहमलोकनिजराजद्वारजायेचलिये॥सर्वे॥अहोमा
हाराजअवस्यविजेकीजे॥दिकोंसर्वे॥अहोमाहाराज
सिषविजेकीजे॥चड॥अइएयादिगरासबअवस्यजा
येचलिये॥सर्वेउवं॥तु३॥थनमाहाजंडपरिक्षेपिबवि

श्राम॥ माहाजं॥ अश्य ये तीलावति पुत्रिकलावति अव
हम लोक वे पार करणो को जान हेतुम लोक सावधान हो
इके रहिये॥ माहाजं नीति सं॥ अहो स्वामि अवस्य विजे
कीजे हमारी प्रणाम॥ माहाजं॥ अहो जा मानु सेव कर अ
वहम लोक वे पार करणो को जाये चलिये॥ ३ संदं॥ वे
पारवं॥ ति पं प्रको भासाडं॥ दि को॥ कुमार सेव कर॥
अहो साहु कार सिध चलिये॥ माहाजं॥ अहो जा मान

लोक अवस्य जाये चलिये ॥ सर्वे डव ॥ माहाजंती ॥
अशुवि अवहम लोक गंगा स्नान कररो को जाये च
लिये ॥ कलावनि ॥ अहो मानु अवस्य चलिये ॥ माहा
जंती निरुदं पलायं हहाये ॥ मध्ये ॥ माहाजंती ॥ अशुवि
गंगामो आशुपुरुचे अवगंगामो स्नान करन हे ॥ कला
वनि ॥ अहो मानु अवस्य करिये ॥ धन पद्धि मागु जाति
वा जान जल विहा रमा लको ॥ माहाजंती ॥ अशुवि गंगा

स्नानहोगइअवहमलोकवगीचामोपूजाकेफलनो
रशोकोजायेचलिये॥कलावति॥अहोमानुअवस्यः
जाइये॥छतिपनंवं॥नु४॥इतिश्रीस्कराउपुराणो
रेवारवराडेकोनुकताढकेसर्वनृनीयंक॥॥थनचतुर्थ
नादिमे॥राग॥नट॥५॥करियेहोनाटसिद्धिपश्रुषर्त
नटेश्वर॥श्रीजयगुरुहरमंगलकरियेहोइहसुखपर
गति॥१॥निपालकिनृपराजपृथिवीराविक्रमरे॥जो

इरुपदगात्रेनृत्पेश्वरभावे पावेदरशनगुरुचरणा॥शा
 थनमाहाजंतीपिं॥वनत्रिहारवंमे॥राग॥वसंत॥५॥
 वनजाईफलविहारिषेलसोषेचलिये॥सुगंधफललि
 येकेहमलावेकंथभरिपाहरषितअवरुम॥मनभरि
 वेत्तिनोदेचंपाफललियेकरअफनेमोसिरभरिफल
 लिये॥१॥वनजाइ०॥नेपालकिभूपतिपृथिवीरवि
 क्रसाहदेवनृपराजभावे॥कमलकिफलदेदिहराषि

नवनखेलकरियेहोवनविहारआज॥शा॥प्रकोंगमा
हाजंनी॥अशुपत्रीअवरुमलोकवनविहारखेलनजा
येचलिये॥कलावनि॥अहोमानाअवस्यचलिये॥हि
कों॥कलावनि॥अहोमानासिप्रचलिये॥माहाजंनी
॥अशुपत्रीअवस्यजायेचलिये॥मध्ये॥माहाजंनी॥
अशुपत्रीअवरुमलोकवगैचामोआयेपरुवेफल
ढोडनेहें॥कलावनि॥अहोमानाअवस्यढोडिये॥थन

पद्धिमागुजाराटिनवनविहारस्त्रिने॥माहाजंनी॥
हा॥ हेकलावनिहोचंपाफलवेलिफलदोडरोजिरो
जिआज॥अफनेसिरभरिफलकिमातापहिरहोमन
भरिआज॥दिको॥कलावनि॥इहा॥ हेमानाहोअफने
मनभरिअफनेदित्तभरिलगाडिंफलकिमाता॥दो
डोकमलकिफलहिमातासिरभरिपहिरहोआज॥
त्रिकोरा॥माहाजंनी॥
इहा

फल ले कर दारे अफने अफने अंगे ॥ मन मरि खेले
वन विहार दो डै वृक्ष च छि **कली वति ॥** हे माना होइ
रिय मन भुरि फल विहारि मन रस भारि भारि आज
॥ उनु मिलि के खेतुं आज दो दे दो डै फल साज ॥ **खेने**
कये का को न सवे ॥ नाल ॥ **वन को न ॥ कला वनि**
॥ इहा ॥ हे माना हो सुनिये माना फल कि विहारि क
रितिये मन भारि आज ॥ फल फल लगे के वलि जा

उमाना अवतरहे मुलिकरा ॥ माहाजंती ॥ हे मैत्रा हो
॥ तेरे मन को इच्छा पूरा हो कर खेतिये आज ॥ जल
फल पाइ के चलै जाइ आज गुनि न रहवे नि ॥ मध्ये ॥
माहाजंति ॥ अइउवि अवहम लोक अफनावा समो
चलै जाये ॥ कला ॥ अहो माना अदस्य चलिये ॥ छ
निपनव ॥ लु १ ॥ धन चंड के वनिपं ॥ प्रको इंदिको
इ ॥ मध्ये ॥ चउ ॥ अइया दिगशा सब अवहमलो

कराज दरवार आये पड़ु चक्षरा एक विश्राम के
रत है ॥ सर्वे ॥ अहो माहाराज चडकेतु अवस्य वि
श्राम कीजे ॥ सर्वे विश्राम ॥ चडकेतु ॥ अइ पृथा
दिगारा सब अवहम लोक सयन करत है ॥ सर्वे ॥
अहो माहाराज अवस्य कीजे ॥ सर्वे सयन याक ॥
परिक्षे पंडव ॥ तुश ॥ धन माहाजं नीवनि पं ॥ प्रको
भासा उं द्विकोडं ॥ मध्ये ॥ माहाजं नी ॥ अइ प्रविकल

वतिरुमारोमंदिलआयेपहुचेक्षराएकविश्रा
मकरनहैं॥ कलावति॥ अहोमानाअवस्यविश्रा
मकीजे॥ विश्राम॥ माहाजनी॥ अइपुत्रिसयनक
लभयोसयनकरनहैं॥ कलावति॥ अहोमानाअव
स्यसयनकरिजे॥ निहं देनेभावखिं॥ थनपुवं॥
निघं प्रकीं॥ पु॥ अहोभाइभवहुमलोकचौरविंता
कराकोजायचलिये॥ पु॥ अहोभाइअवस्यजा

येचलिये॥द्विकों॥७॥अहोभाइसिघचलिये॥
मध्ये॥अहोभाइयहमाहाजंनि लोककोधनचोरि
करनहै॥अहोभाइअवस्यलेहोअवरुमभिलेवं
मे॥७॥अहोभाइविं॥थनप्यालमातको॥७॥अहो
भाइअकयहधनलेकेचलिये॥७॥अहोभाइअ
वस्यचलिये॥द्वलं॥माहाजंनीहेलंवाकभाव
विं॥माहाजंनिदंरुहाय॥मध्ये॥अहोआश्चर्यअ

श्रय्यरुमारोधनमातसवचौरितेगयोअवहम
क्याकरेहरिहरि॥भोसुयभाव॥धनकलावतिदं
हहाये॥कलावति॥अइमाताआफकोक्याभइउ
निष्टउतिष्टमामयाताहाजोनाथने॥निहंरंदं॥मा
हाजंनी॥उहा॥हेकावतिहोमेरिकरमकुदिनमः
योपतिमेरिपरदेशभाव॥धनमातचौरिकरचीव
हायनारान्हायदेव॥अइप्रतिदेष्टोदेष्टोहमलो

कसोत्रेरहावषनमोपायीचौरनेधनमातलेगइअ
वरुमाशीक्यागानि॥ कलावनि॥ इहा॥ अइमानाहो
कौनेचिंतातुमनहिकरियेअवरुमकछुदानकरुं
गि॥ रुमारादरव्यकछुनहिहोगाधीरुजमनकरुंगि
॥ माहाजंत्री॥ इहा॥ हेकलावनिहोकौनेउरुजनको
नेपापिकौनेअधमिजनआइ॥ रुमारामोठिहिराः
चौरीकरलेगइक्यागानिहमारीआज॥ कलावनि॥

हेमाना हो हमारी करम ऐसी होगइ सुनिये मानुष
न॥ सुख पिछे डरव होति हे भजिते चरणानाथ॥ अइ
माना यह सनिसार ऐसि हे सुख पिछे डरव होन हे भि
छा सो जीवरक्षा करुंगे चिंता मत करिये धीरुन क
रिये॥ मा हांजंति॥ अइ पुत्रि भिक्षा लेने को जायव
लिये॥ कसावति॥ अइ माना अवस्य च लिये॥
लंदा॥ तु३॥ थन मा हांजंति निस्र वरु निपं॥ मध्ये॥

माहानंति॥ अक्षुत्रिभिच्छातेकेआयीथीआजभिद
नहिमितेक्याकरेथकीनभइअवसयनकरनहे॥क
ला॥ अइमानासयेनकरिये॥ निहं देनेभावधिं॥ थन
दरिद्रवास्त्रावृद्धतियं॥ मध्ये॥ अइएयादिसवअव
हमगंगातीरमोआयेपहुंचेसत्यनारायणकोबनक
रनहें॥ ब्राह्मणउषियासधि॥ अहोस्वामिअवस्यकरि
ये॥ सर्वेजवसविश्राम॥ थनबुनयाकभाधिं॥ श्लोक

॥ सर्व ॥ सत्यनारायणदेव वंदे हं कं हरणानिधे ॥ सर्व
उः स्व हरं नित्यं परत्रे च परंगति ॥ अहो वै लोकनाथ
सत्यनारायणानुमारे चरणकमलमोकोटि रसाश
गप्रणाम् हमारो मनोवांछा पूरणकरिजे ॥ वासना
॥ अइ पूयादिगण सब अवहम लोक सत्यनाराय
णको नाच कीर्तन करिके जागराम करि ॥ सर्व ॥ अ
हो स्वामि अवस्य करिजे ॥ वासना ॥ अहो इखियाना

लिहायविमाम्॥ थनपद्धिमाप्रहर्तनत्पतिलयमध्वे॥

चवोलाइये॥ इरिवियादं हहाया॥ इषिया॥ अहोनृत्य
कनुमलोकइहांआइयेआइये॥ इषिया॥ अहोनृत्य
त्यकआजजागरामकरिकेनृत्यकरो॥ नृत्यक॥ अ
होइषियाक्यावासेवोलायाकहिये॥ नृत्यक॥ अ
होइषियाअवस्यकरोगे॥ नृत्यक॥ अइनृत्यकीअ
वसत्यनारायणकोनृत्यकरिकेजागरामकरिये॥
नृत्यकी॥ अइनृत्यकअवस्यकरिये॥ थनपद्धिमा

नालं॥ प्रको॥ नृत्य इहा॥ लक्ष्मी सरस्वती सत्य नारायण दैव
कि दैव वहि मन को कामना पूरा होवे भजिले संगि नुं माह
नृत्य की॥ फल हि मे वा ड प व वान् सु गंध अतर कारिये
वास॥ माता दमना जाती फल तुला सिपत्र कि अपुं साथ॥
दिको॥ नृत्य क॥ करिये संगी नारान् भाव वर्ष वर्ष कि भः
क्ति भाव॥ दरसन करिये नित्य आज मन हि कामना पूरन
साच॥ नृत्य की॥ वो लो संगि हरि हरनाथ भक्ति करिले सः

स्यनारान्गरुदाहिसेसआसनराजेभुक्तिमनकीकाम्
मध्ये॥ नृत्यकौ॥ अहोइषियाश्रीसत्यनारायणकोजाग
रामहोगइअवहमजानहे॥ इषिया॥ अइनृत्यकयहप्र
सादलैकेजाइये॥ नृत्यकौ॥ अहोइषियाअवस्य॥ इषि
यानप्रसादवियेभांषी॥ नृत्यकौलिस्वयो॥ नृत्यक॥ अइसं
गीअवहमलोकअफनामंदिलजायेचलियो॥ पछिमाण
हलेंव॥ थनकलावतिहेलेंचाकदं॥ कलावति॥ अहोज

नवदआगमेनेषानेकोकछुनहिमितगाशरानकोनि
दानहिभइअवक्षुधासांवहुनपीडाभइषानेकोनल
सकनहैं॥पत्तारंमहायेमध्येनवस॥कलावति॥अहो
हापुरुषयहकोनादेवकोपूजाकियाहमकोक्षुधाभइषा
नेकोभिक्षादीने॥वात्सरा॥अशभिक्षुकयेहसत्यनाराय
णकोवतकियाथायहप्रसादलेकेजाह॥कला॥अहोभ
क्तवात्सराअवस्य॥धनप्रसादवियेभांषिं॥धनकलाव

नितप्रसादकाये॥ कला॥ अहोभक्तवासरुणा अवहमयह
प्रसादवाइयो मन्नाकोभिलेजाडंगेहमारिप्रणाम्॥ लिख
येपलाषं हहाय मध्येनापं विश्राम॥ वासरुणा॥ अइपूयादि
गरासव अवहमलोकअफनावासचलिये॥ सर्व॥ अहो
स्वामी अवस्यविजेकीजे॥ सर्वेदंपलाषं हहाये मध्ये॥
हो॥ रुतिपनंबा॥ कलावनि॥ अइमानाडनिस्तोनिष्ट॥ मा
हजं नीहेलं वाकभांषिं॥ साडुनि॥ अइपुत्रिकाहेतुमड

करे रहानुमारी मन मे क्या काम चिंतना करने हो ॥ कला
वति ॥ अइ माना हम कुछु अपराधन ही किया रात मो नि
डात गाना हे क्षुधा से बहुत पीडा भयी बाहर गाने सन्य नारा
यरा को वना के या जगामे जाय के भिक्षा मंगने गया सो प्र
साद पाया हमने खाइ के अफ को भिले आया तीजे ॥ माहज
नी ॥ अइ पुत्रि धन्य तुम आगे नुमारा पिता ते भि संकल्प कि
या था अभिन क किया नहि प्रसाद दे हो ॥ कला वति ॥ अइ मा

ना अवस्था ॥ प्रसाद विये मांषिं ॥ माहाजं नी ॥ अइ पुत्रि अ
वहम भिक्षा को तलास करि के यहिर रहत हैं ॥ कला ॥ अ
इमाना अवस्था रहिजे ॥ निहं परिछे पंडुवं ॥ नु ४ ॥ थन चउ
के नु उपरि पिव सवनन ॥ हेलवा कषिं ॥ चउ के नु दं हहा
य पलाषं ॥ मध्यो ॥ चउ के नु ॥ अहो आश्चर्य २ रुमारा दर्ष
र मोचो रियो क्या करे ॥ लिहाये विश्राम ॥ सर्व ॥ हेलन चाक
भावषिं ॥ चउ ॥ अहो कौ की दारयू चौर का हो हे जिसने चौर

रि की प करे गा उस को हम प्रसाद दे डंगे षवर शो को न ला
स करो ॥ चौकि ॥ अ हो मा हा राज हम प कर शो को जान हे ह
मारो प्रणाम ॥ चौकि दे ॥ ह हा ये ॥ चौकि ॥ अ हो जन वृन्द अब
हम बौर को षो जन ला सक रि के प करण जान हे ॥ छ नि प न
वं ॥ च ड ॥ अ इ प या दि ग रा सब अब हम लो चौ की दार को
समाचार बु फि के य हि रह न हे ॥ सर्व परि क्ष प ह व ॥ लु ५ ॥
थन मा हा जन कृ मार से व कर षे प वं नि पं ॥ प्र को ड हि को डं ॥

मध्वे॥ माहाजं॥ अहो सेवकर अवहमलोक यहसहरमो
वासरुंगे॥ कुमारसेवकर॥ अहो साहुकार अवस्परहि
ज्ये॥ सर्वजसविश्राम॥ धनचौकिदारवद्वनिपुनं॥ जव
सखयेभारिवं॥ चौकि॥ रेरेचौरीकर॥ चौकिदारनमाहाजनया
लाहानजोनाथं॥ सुंदंरहाये॥ चौकिदार॥ अहोजनवन्दयह
चौरिलोककोराजाचउकेनुकाहजुरमोजाहेकराजानः
हे॥ दवतंत्रं॥ धनवउकेनुउपरिक्षिपंवं॥ धनचौकिदारवद

श्रीसत्यनारायणकोरुक
नारुकपुस्तकमन्दिर

श्रीसत्यनारायणको
2574

श्रीसत्यनारायणको कोरु क
नारु कपुस्तक मालिदम

रस्मेत्नाडडलापिष्वय॥ माहाजं सर्वे न स्वये भावा॥ मा
हाजं॥ अइप्यादिगणसव देषो देषो श्रीस नाराय
णकाप्रसादसोनाडडनरगईजामानुकोहानपकरक
उतारो॥ सर्वे॥ अहोसाहुकारअवस्प॥ हहायेलाहो
नाहय॥ माहिस्मेतंतिहाय॥ माहाजं॥ अहोमाहितो
कयहमुजरीतेकेजाह॥ माहि॥ अहोसाहुकारअवस्प
॥ थनशमवियेभांषिं॥ माहिहस्वये॥ माहि॥ अहोभाइ

माहाजंतिहायेविआम॥

अवहमलोकमकापरजायेचलिये॥माफि॥अहो
वडेभाइअवस्यजायेचलिये॥थनमाफिनिस्त्रं प
लं॥माहाजंनी॥अइएत्रिलोकअवहमलोकसिंडर
जात्राकरिकेआफनामकापरजानेकोनयारं करो॥क
लावति॥अइमानाअवस्य॥थनअवीरनायहये॥मा
हाजं॥अइएयादिगणासवअवहमलोकआफनामं
दिलमोजायेचलिये॥सर्वे॥अहोसाहुकारअवस्यच

तिजाइये॥थनअवीरनायेहोलावंनिपं॥प्रकोडं॥
दिकों॥सर्व॥अहोसाहुकारसिघचलिजाये॥माहाजं
॥अइपूयादिगणसवअवस्यजायेचलिये॥सर्वेडं
॥नु१॥थनकविरवमे॥राग॥भथ्यारि॥प्र॥जायेचः
तोएसेभाइधीरधीरेकोनिजगुणालहरावोले॥चलो
भाइधीरधीरअवरुमधावेदाताकोनिकणचलेमन
एसभरिभरिआज॥१॥जयेनृपराजपृथिवीरविक्र

कवीरभाषा॥॥प्रको॥अहोभाइमकरलाहअवहनलोक
मनजनकाप्रातजायेचलिये॥मकरलाह॥अहोबड़ेभाइअव

सुजायेचलिये॥दिकों॥२

महादेव-वहिये ॥ द्विकों ॥ २

महादेवनेपालकीभूषति॥ करेमाइमजनरुन
वनाथनृत्येश्वरसिद्धिवरदायकनिबनामधरे॥ १॥
कवीरुवं॥ माहाजनीस्येनसर्वेद्वेष्यतिपं॥ प्रकोंडं
॥ द्विकोंडं॥ मध्ये॥ माहाजन॥ अइष्टयादिगरासव
अवहमलोकआफनामंदिलआइपहुचेक्षराए
कविश्रामकरतहं॥ सर्वे॥ अहोसाहुकारमहाजन
अवस्यविश्रामकरतहं॥ सर्वेविश्राम॥ माहाजन

अइएयादिगारासवअववुतकरतहें॥ सर्वे॥ अहोसाहुकारअवस्य
प्रतयाक नमि

॥ अइएयादिगारासवसत्यनारायणाकोबुनकर
नेकोजायेचलिये॥ सर्वे॥ अहोसाहुकारमहाजन
इहसराजामसोअवस्यचलिये॥ थनसराजामजो
नावसर्वेदं॥ पलाषनहहाये॥ मध्ये॥ माहाजन॥ अ
इएयादिगारासवअवपरिक्रमाकरिये॥ सर्वेअ
होसाहुकारअवस्यकरिये॥ सर्वेदं॥ परिक्रमोयाक
मे॥ राग॥ श्री॥ वो॥ सत्यनारायभावकरेवन॥ को

टि श्विननिहउःखसवहरा ॥ १ ॥ मनकामनाशू
करदीजे ॥ हिजराजभयानन्दकरजोरेसरोज ॥ २ ॥
स्तोत्रयाकश्लोक ॥ सत्यनारायणदेववन्देहंकसूरा
निधे ॥ सर्वउःखहरंनिन्यंपदेचपरंगतिं ॥ १ ॥ सर्व
॥ अहोश्रीसत्यनारायणआफकावरणामेसाष्टंग
दण्डवन्प्रणामरुमारामनोरथपूरणकीजे ॥ महा
जन ॥ अश्वपुयादिगणसबप्रसादरवाश्केजागराम

करन हैं ॥ सर्वे ॥ अहो साहु कार माहाजन अवस्य
करिये ॥ सर्वे लिहाये ॥ विश्राम ॥ थन कवीर वपि
॥ प्रकोडं दि कोडं ॥ मध्ये ॥ कवीर ॥ अहो साहु कार
महाजन हमारो प्रणाम ॥ माहाजन ॥ अहो क
वीर लोक आज श्री सत्य नारायण का तुम लोक
ने लहरा करि के जागराम करिये ॥ कवीर ॥ अ
हो महाजन अवस्य ॥ कवीर हे स्वये ॥ कवीर ॥

अहोभाइमकरलात् अवहमारं तहराकरिखे सन्य
नारान् कोजागरां करिये ॥ मकरलात् ॥ अहोभाइव
उत्तात् अवस्य करिये ॥ थनकवीरया नेवात् हाये
॥ मालको ॥ ॥ कवीरलिखक ॥ कवीरा ॥ अहोलाइ
कारमहाजन श्री सन्य नारायण काजागरा म्होग
यी अवहम लोक जाने हैं ॥ महाजन ॥ अहो कवीरलो
क यह मुडिले के जाह ॥ दामविये भांखिं ॥ कवीरलि

स्व॥ धनुत्तात्॥ अहोभाइमकरलात् अवहमलोः
कआफनामंरीतमोजायेचलिये॥ मकर॥ अहोव
डेभाइधनुत्तात् अवस्यजायचलिये॥ तिपं॥ प्रकें
डं॥ दिकें॥ मकरलात्॥ अहोवडेभाइधनुत्तात्सि
धजायेचलिये॥ धनुत्तात्॥ अहोभाइमकरलात्
अवस्यजायेचलिये॥ इवें॥ माहाजन॥ अइएयाधि
गणसवअवहमलोकतीर्थस्नानकरणोंकोजाये

चलिये॥सर्वे॥अहोसाहुकारमाहाजनअवस्म
जायेचलिये॥सर्वेदं॥माहाजंसर्वे॥थर्वंनियं
॥प्रकोडं॥दिको॥सर्वे॥अहोसाहुकारसिधुजाये
चलिये॥माहाजं॥अइपयादिगरासवअवस्मज
येचलिये॥सर्वेइव॥तुश॥थनतुंगध्वजसर्वेअलं
कारपिव॥मध्ये॥तुंगध्वज॥अइपयादिगरासव
अवरुमसौकक्षरायेकविश्रामकरतहै॥सर्वे॥

मंत्रि॥ अहो महाराखदि लोक वोलाइये॥ महो॥ अहो मंत्रि अवश्य॥ ४

अहो माहाराज तुंगध्वज अवश्य विश्राम जीजे॥ सर्व
विश्राम॥ तुंगध्वज॥ अहो मंत्रि सिकार जाने कोख
जि लोक वोलाइ के सिकारि प्रजा लोक वोलाइये॥
मंत्रि॥ अहो महाराज तुंगध्वज अवश्य॥ मंत्रि दं ह
हाय॥ अहो यो माने कानुम लोक या हा आइये॥
जव सविश्राम॥ धन नाय व मे॥ राग॥ पहलिया
॥ ख॥ जाये उन भाइ नृपराज दरवार॥ खजिगुरा

गावेदेशदेशजाइके॥१॥एधिवीरविक्रमसाह
नृपवरमाने॥नुरंनहिनृपराजदरवाजायेहो॥
॥२॥प्रको॥गुणसिं॥अहोवडेभाइधनसिंअव
हमलोकराजानुंगध्वजकेपासजायेचलिये॥ध
नसिं॥अवस्यजायेचलिये॥दिको॥धनसिं॥अहो
वडेभाइसिप्रजायेचलो॥गुणसिं॥अहोभाइध
नसिंअवस्यजायेचलो॥मध्येनवस॥स्वये॥नाय

निस्तनंगा अहो मंत्रि हमारो प्रणाम क्या आज्ञा होत
हैं॥ मंत्रि॥ अहो खजि लोक तुम लोक जाइ के सिक
रिड निजा लोक वोला इदेह॥ नाये॥ अहो मंत्रि अव
स्य॥ तिस्त्रये॥ गुण सिं॥ अहो भाइ धन सिं राजा का
हो कम से डनिया सिकारि लोक वोला उंगे॥ धन सिं
॥ अहा वडे भाइ अवस्य वोला इये॥ धन नाय पिं
य के स्याल माल को॥ तिस्त्रये॥ गुण सिं॥ अहो मंत्रि

त्रिसिकारिलोकवोनाभायेषहुचे॥मंत्रि॥अ
होषक्रिलोकयहषचलेकेजाह॥नायेअहोमंत्रि
अवस्य॥दामविये॥भाषिं॥प्यातमातको॥गुणसि
॥अहोभाइधनसिंअवहमलोकआफनामंदित
मोजायेचलिये॥धनसिं॥अहोवडेभाइगुणसिं
अवस्यजायेचलिये॥नियं॥प्रकोडं॥दिकों॥धन
सिं॥अहोवदेभाइसिधुजायेचलिये॥गुणसिं॥

महां॥ अहिंसां त्रिअवहम जात हे हमा हे पुणाम॥ मंवि॥ अहो महान यह द्य च लेख जाह॥ महां॥ अहिंसे
त्रिअवहम
॥ द्वादशें
-९

अहो माइ अवस्य जाये च लिये॥ इवें॥ यान सिका
रिलोक पिचावं॥ त्रिपं॥ प्रकों॥ नाइको॥ अहो सि
कारिलोक अवहम लोक तुंधज माहाराजा के पास
जाये च लिये॥ सर्वे॥ अहो नाइके अवस्य जाये च
लिये॥ द्विकों॥ सर्वे॥ अहो नाइके सिध जाये च ल
ये॥ नाइको॥ अहो सिकारिलोक अवस्य जाये च
लिये॥ मध्ये॥ जवस॥ सर्वे॥ अहो नाइके सिधः

जाये चतिये ॥ नाइके ॥ अहो सिकारिलोके अव
सजाये चतिये ॥ मध्ये ॥ जवस ॥ सर्वे ॥ अहो मंत्रि
हमारे प्रणाम कया आज्ञा होत हैं ॥ मंत्रिदं ॥ मंत्रि ॥
अहो सिकारिलोक महाराजा के निकट चलो ॥ स
र्वे ॥ अहो मंत्रि अवस्य ॥ सर्वे ॥ पलाखं हहाय ॥ मंत्रि
॥ अहो तुंगध्वज महाराज यह सिकारिलोक लेके आ
ये पहुंचे ॥ तुंगध्वज ॥ अहो मंत्रि अवस्य तुम लोक

इहा आइ के रहिये ॥ सर्वे ॥ अहो महाराज अवस्य
॥ सर्वे ना पं विश्राम ॥ तुंग ध्वज ॥ अइ पृथे नु मलोक
अंत पूर मो जाये के रहिये हम लोक सिकार सों आ
वेगा ॥ रानि ॥ अहो स्वामि महाराज अवस्य सावध
न होइ कर विजे को जे हमारी प्रणाम ॥ तुंग ध्वज ॥
अहो मंत्रि सिकारि लोक यह धनु नीर ले के अश्वा
रुह सों सिकार जाये चलिये ॥ सर्वे ॥ अहो महाराज

नुंगध्वज अवस्य विजे कीजे ॥ मिजंजु को दंगा हहाये
 ॥ सिकार वं मे ॥ राग ॥ स्वरथ ॥ ख ॥ चतिये हो सब
 गरा निज लोक मिलि कर सिकार घेत न आज ॥
 नृग भालु गय डा अजिं गरव्या घुरज ना वर मारे ॥
 १ ॥ जय नृप भूषति पृथिवी र विक्रम सा ह देव न
 वत र भाजे ॥ धनुष नीरव सो बंध क जो रि क जन
 वर मारि कर ल्यावे ॥ २ ॥ प्र को ॥ नुंगध्वज ॥ अहो

सर्वे दुःखे

उराजराजकुमारमंत्रिलोकभवसिकारधेन
नजायेचलिये॥**सर्वे**॥ अहोमहाराजतुंगध्वज
अवस्थविजेकाजे॥**दिकों**॥**सर्वे**॥ अहोमहाराज
तुंगध्वजसिधुविजेकाजे॥**तुंगध्वज**॥ अहोपुत्र
राजकुमारसौक्यअवस्थजायेचलिये॥**सूर्यकां**
ति॥ अइसविभातुकांतिरविकांतिअवरुम
लोकमहाराजकाहुकुमसोंअंतपूरजायेचलि

ये ॥ सषि ॥ अश्महारा निस्सूर्यकांति अव
 स्प विजे की जे ॥ स्वस्ते ॥ अंत पूरवं मे ॥ राग ॥ वि
 लावर ॥ ५ ॥ हे हं सब पखिन मिलि धीरे धीरे भावे
 निज कुल दरवार आज ॥ मन मो सास करि नीति
 विना लकरे निज गगार सेर से छल बल सुखी रवि
 धि करे वयारिके निदान करे ॥ १ ॥ हे हं पृथिवी रवि
 कम साह देव नृप राज मेया लकि भूषंति गावे ॥ स

वजनमिलिकरपरजनदारेनिजराजदरवारवः
ढाउदेसदेशउलकरफिरिकरमानेहमआज॥३॥
॥प्रकों॥सूर्यकांति॥अइसषिभानुकांतिरविकां
तिअवहमलोकमाहराजाकाहुकुमसोअंनपू
रजायेचलिये॥सषि॥अइमहाराणिअवस्यवि
जेकीजे॥द्विकों॥सषि॥अइमहारानिसिधुविजे
कीजे॥सूर्यकांति॥अइसषीअवस्यजायेचलिये

काज ॥ सूर्यका ॥ न ॥ अ ॥ इ ॥ स ॥ वा ॥ अ ॥ च ॥ र ॥ व ॥ म ॥

मंत्रि सिकारि प हलं ॥ अहो महाराज ह मारा पुरा ॥ ६

तुंग ॥ अहो सिकार जो क आहं आ इ के रहिये ॥

मंत्रि सिकारि ॥ अहो महाराज अवस्य ॥ नापं घ्रा ॥ ६

॥ सर्वे डुवां तु ॥ अथ न जनारि वि प हलं ॥ ज व स चो ॥ अथ

न तुंग ध्वज ॥ सिल प हलं ॥ मध्ये ॥ तुंग ध्वज ॥ अहो

पुत्र राज कुमार संवंगरा अत ह म लोक सिकार व

न मो आये प ह च क्षरा एक विश्राम करत हैं ॥ सर्वे

॥ अहो महाराज अवस्य विश्राम कीजे ॥ सर्वे वि

श्राम ॥ तुंग ध्वज ॥ अहो पुत्र राज कुमार सिकारी लो

कनुमलोक जाइ के जनावर को नलास करिये ॥ रा
ज कुमार सिकारिलोक ॥ अहो महाराज अवस्य
॥ राज कुमार सिकारिलोक दं ॥ राज कुमार ॥ अहो
सिकारिलोक अवजनावर नलास करुं के ॥ सि
कारि ॥ अहो राज कुमार अवस्य करिये ॥ हाकं ॥
लिये ॥ थन जव स राज कुमार चला गय उ इव धरव
वस ॥ राज कुमार ॥ अहो सिकारिलोक कनुमलोक ज

नाबरकोपासोलगाइकेरहियेहमव्याघकोमा
रुंगे॥सिकार॥अहोराजकुमारअवस्य॥राजकु
मारदंसर्वविश्राम॥राजकुमारराधुस्यायेजोरानि
पंहलें॥राजकुमारलिहाये॥राजकुमार॥अहोसि
कारिलोकयहव्याघकोपकरो॥सिकारि॥अहो
राजकुमारअवस्य॥राजकुमारषट्त्रहायेतुंगधो
जयाहवनेदं॥राजकुमार॥अहोपिनामहारज

सिकारि

इह

व्याघ्रकोमारिकर आये परुचे ॥ तुंगध्वजा ॥ अहो
राजकुमार भति भइनु मइहा आइके रहिये ॥ रा
जकुमार ॥ अहो पिता माहाराज अवस्य ॥ नायं वि
श्राम ॥ सिकारि नाइके ॥ अहो सिकारि लोक अव
हम लोक कुटे को छोडि कर जना वर को पकराउं
गे ॥ सिकारि ॥ अहो नाइके अवस्य छोडिये ॥ ना
इके ॥ रे कुटे जना वर पकर को ले आह ॥ धनषि

चानो लने विचाया व्याल माको ॥ विचा उ वं ॥ ना
के ॥ अहो सिकारि लोक अवहम लोक जाइ के व्या
घ को प करौ गे ॥ सर्वे ॥ अहो नाइ के अवस्य चलि
ये ॥ सिकारि सर्वे दं ह हाये ॥ स्वय भाव ॥ धन थथा
माल को धु जो ना व तुंग ध्वज या ह व ने वं ॥ सर्वे ॥ अ
हो मा हा राज इ ह व्या प मा रो के ले आइ ॥ तुंग ध्वज
॥ अहो सिकारि लोक भली भइ इ हा आइ के रहिये

॥ सर्वे ॥ अहो महाराज अवश्य नापं विश्रामा ॥ नुं
ग ध्वज ॥ अहो पुत्रराज कुमार नमय हि र हिये हम
गये डा को मारि कर आउगे ॥ राज कुमार ॥ अहो पि
ता अवश्य हमारि प्रणाम ॥ नुं ग ॥ अहो मंत्रि लोक
अव हम लोक गय डा मारणे को चलो ॥ मंत्रि ॥ अ
हो माहाराज अवश्य ॥ मंत्रि राजा दं न ब्रहाय ॥ नुं ग ॥
अहो मंत्रि लोक अवज नावर का हाहे न ता सकरि

केयहिरहनहंमंत्रि॥ अहोमाहराज अवस्य
॥ सर्वविश्राम॥ धनगयडाचला हवनेषिचालि
वनेनया॥ पिव्वपहलं॥ गयडाचलाषवसषिचा
जवस॥ धनषिचायारव्यातमात्कौजवसचनं
गंराजा॥ अहोमंत्रिलोकअवहमसौकगयडा
कोमारराजायेचसिये॥ मंत्रि॥ अहोमहराज
अवस्यविजेकीजे॥ राजा॥ पलाषंहहाय॥ फाः

कांथनगुजारनिदंगालवाजागयडाधुसपायः
पताषं हहाये॥ तुंग॥ अहो पुत्रराजकुमारगय
डामारिकरआइपहुचे॥ राजकुमार॥ अहोपि
तामहारानभलीभइइहासनमोविजेकीजे॥ तुं
ग॥ अहोपुत्रराजकुमारअवस्य॥ सर्वनापंवि
श्राम॥ तुंग॥ अहोसिकारिलोकयहगयेडाले
करआह॥ सिकारि॥ अहोमाहारानअवस्य॥

सिकारिदं॥ नाइको॥ अहोभाइसिकारिलोक
ग्रहसिकारमेसिकारसों मरणोवाला जनावर
लेने जाये चतिये॥ सिकारि॥ अहो वडेभाइअ
वस्य चतिये॥ विचाना पंदं॥ पलायं हहाय॥ ना
इके॥ अहोभाइलोक देखि जनावर॥ सर्व॥ अ
हो नाइके अवस्य देखत है॥ स्वयभाव॥ थान
ष्पात्तमालको॥ विचावा न्याका स्तिने॥ सिका

मंत्रिसिकारि॥ अहो महा राज जनावर हें का महि देखत जात ते ॥ राडा ॥ अहो मे
रिलो क अवस्य रंको जिये ॥ मंत्रिसिकारि दं ॥ मंत्रि ॥ अहो सिकारि जनावर खोजिये ॥

रिनज ना वर ना हये लि हाये ॥ यत्ना षं ॥ नाई के ॥ अ
हो महा राज य हज ना वर ले के ॥ आये पडु चे ॥ तुग ॥ अ
हो सिकारि लो क भली भयी इ हा आई के रहिये ॥ सी
कारि ॥ अहो महा राज अवस्य ह मा रो पु रण म ॥ ना पं वि
आम ॥ तुग ॥ अहो पुत्रा दि ग रा सब ॥ तु म लो क ज ना वर
ले के जा ह ॥ सर्वे ॥ अहो महा राज ॥ अवस्य ह मा रो पु रण म ॥

सिकारि ॥ अ
हो मंत्रि अ
वस्य ॥ सिकारि ॥
रे कुटे ज
ना वर ले
जिये ॥ रिव
चां मा ले रया
॥ वला जरा क
लिये रया ॥ स
कारि ॥ मे लु दं
दं ॥ वला वि हें
दं ॥ ५

तुम॥ बाहेक सर्वे दे॥ राजकुमार॥ अहो मंत्रि सि कारि लोक
 अव माहा राज का आता सो यह जना वर ले के दरबार ये च
 लिये॥ सर्वे॥ अहो राजकुमार अव स्प विजे की जे ॥ छति पं
 नं वं॥ धन ग्वाला लोक सा जो ना व नि पं॥ प्र के॥ अहिर ग्वा
 ला॥ अहो गो थ ला लोक गो रा च हू उन जा ये च लिये॥ गो
 थ ला॥ अहो अहिर ग्वा ला अव स्प जा ये च लिये॥ द्वि के
 गो थ ला॥ अहो अहिर ग्वा ला सि पु जा ये च लिये॥ अ

हिरगवाला॥ अ हो गोथला लोक अवस्य जायि चलिये॥
मध्यज वस॥ अ हिरगवाला॥ अ हो गवाला लोक यह गोच
रवन मो आये पडुचे गोवाच ह्राव॥ गोथला॥ अ हो अहि
रगवाला अवस्य॥ थन साजय रयाल माल को॥ सास्मेत गो
थला लिहाये॥ गोथला॥ अ हो अहिरगवाला गो लि के आ
ये पडुचे॥ अ हिर॥ अ हो गोथला लोक ई हा आई करहिये
॥ गोथला॥ अ हो अहिरगवाला अवस्य॥ नापं विआम॥ अ

हिर॥ अहो गोथला लोक यह गो बाध कर यह वट वृक्ष
को निकट श्री सत्य नारायण पुजा करोगे॥ गोथला॥ अहो
अहिर ग्वाली अवस्य॥ थनसा चिये भाव॥ गोथला॥ अहो भा
ई लोक यह गो सो डुदुहि कर पुजा को सराजाम करोगे॥
गोथला लोक॥ अहो भाई अवस्य॥ थन डुदु ह्याये भां ब्याल
मा को॥ गोथला डुदु ज्वना गोथला॥ अहो अहिर गोथला
ई ह डुदु सराजाम सो पुजा करिये॥ अहिर॥ अहो गोथला

लो क भव स्य ईहा आइ के रहिये ॥ गोथला ॥ अहो अहिर
गवाला भव स्य ॥ नायं विश्राम ॥ अहिर ॥ अहो गोथला लोक
भव सत्य नारायण को पुजा करोगे ॥ गोथला ॥ अहो अहिर
गवाला भव स्य ॥ सर्व दंड हाये ॥ मध्ये ॥ अहिर ॥ अहो गोथ
ला लोक यह सराजाम सो श्री सत्य नारायण को व्रत करत
हैं ॥ गोथला ॥ अहो अहिर गवाला भव स्य करिये ॥ फेकतुक
॥ पूजा याक भांषि ॥ अहिर ॥ अहो गोथला लोक भव परि

अष्टक

कर्म करिये ॥ गोथला ॥ अहो अहिरगवाला भवत्य ॥ सर्वेदं
परिक्रमाया कमे ॥ राग ॥ श्री ॥ चो ॥ सत्यनारायण भाव करे व
त ॥ कोटि २ विनति इन दुख सब हरे ॥ १ ॥ मन का मुना
२ पुर कर दीजे ॥ द्विज राजा भयान नन्द कर जोरे सरोज ॥ २
॥ सर्वे श्लोक ॥ सत्यनारायण देवं वंदे हं करूणा निधे ॥
सर्व दुष हरं नित्यं परत्रे च परांगति ॥ अहो च लोक्य नाथ
श्री सत्यनारायण तु मागे चरण कमल मो कोटि कोटि

सात्वांगप्रणामः हमारोमनोरथपुणर्विदिजे ॥ सर्वे
लिहायेजबस ॥ अहिर ॥ अहो गोथला लोक अवहम
लोक श्री सत्यनारान् को भजन करी जागरम करी गे
॥ गोथला ॥ अहो अहिर गवाला अवस्य करिये ॥ सर्वे वि
आम ॥ तुंगदं ॥ तुंग ॥ अहो जन हृन्द अवहम यह बटक्ष
के निकत जायके पुजा देषत हैं ॥ पलाष हसिये जबस ॥
तुंग ॥ अहो गवाला लोक क्या कर्त हो ॥ अहिर ॥ अहो माहा

पुरुष तुम को ना हो ॥ तुंग ॥ अहो गवाला हम तुंग ध्वज नाम
राजा सिकार घेलिकर भाई के वनो तरवा सभ यथा ॥ अ
हिर ॥ अहो मा हा राज हम लोक गवाला हैं आज श्री सत्य
नारायण को पूजा किया था यह प्रसाद लीजे ॥ तुंग ॥
अहो गवाला लोक यह प्रसाद तुम हिले हो हम जान हैं
॥ तुंग ॥ निचिये पलाष मध्य ॥ तुंग ॥ अहो जन दुन्दुभ वह
म अफ ना राज दरवार जान हैं ॥ छ नियं ॥ थन गवाला लोक

या भजं या क ॥ थन तुंग वृत्ति पं ॥ प्र कों ॥ अहो जन वृन्द दे
खो देखो हमारे दरवार भुक्त भई के पुत्रा दिन स भई श्री
सत्य नारायण को दोष सो यह भव सा भई अव फेर श्री
सत्य नारायण को पूजा करण जात है ॥ द्वि कों ॥ तुंग ॥ अ
हो जन वृन्द सि पुजात है ॥ मध्ये ज वृत्त ॥ स्वये ॥ तुंग ॥ अ
हो ग्वाला लोक तुम ने दिया का प्रसाद हम ने त्याग किया
का फल सो हमारे भुक्त भया अव हम पूजा करि के प्रसा

दले करजाउगे ॥ अहिर ॥ अहो महाराज अवस्थ कीजे
इहासन मो विजे कीजे ॥ तुंग ॥ अहो गवाला अवस्थ ॥ तुंग
नापं विश्राम ॥ गवाला ॥ अहो माहात्म्य यह सराज म सो
पुजा करिये ॥ तुंग ॥ अहो गवाला अवस्थ ॥ धन पूजा क भां
॥ स्तोत्र ॥ सत्य नारायण देवं देहं करुण निधे सर्व दुष
हरं नित्यं परचै च परगति अहो त्रैलोक्य नाथ श्री स
त्य नारायण हमारो दुख हरि दु पुत्र सो क ना सकरिह

मारो व र्धमान करि दिजे हमारो प्रणाम ॥ **थन गवाला**
न प्रसाद जो नाराजा गवाला दं गवाला ॥ अहो माहाराज
यह प्रसाद लेके भोजं करो तब दुख ना स होत है ॥ **तुंग ॥**
अहो गवाला अवस्य ॥ **प्रसाद काय नये भाव ॥ तुंग ॥** अहो
गवाला अव हम जात है ॥ **गवाला ॥** अहो माहाराज अवस्य
विजे किजे हमारो प्रणाम ॥ **तुंग ॥** ह हाय गवाला विश्राम
॥ **तुंग ॥** अहो जन हृन्द श्री सत्य नारायण को प्रसाद

इके अफना द वीर जात है ॥ दवल वं ॥ धन पो ध्यान ब्रति
पं ॥ प्रकों ॥ अहो भाई गंगा मे जा यि चलिये ॥ पो ध्या ॥ अहो
वदे भाई अवस्य जा इ चलिये ॥ द्विकों ॥ कि जा स्रं ॥ अहो
वदे भाई सि घु जाये चलिये ॥ पो ध्या ॥ अहो भाई अवस्य
जाये चलिये ॥ मध्य ॥ पो ध्या ॥ अहो भाई गंगा को निक
ट आई पड़ु चे क्षे रा एक वि श्राम करत है ॥ कि जा स्रं ॥

ASIA ARCHIVES

2574

वलं॥ मध्ये॥ चौकि दारा॥ अहो माहाराज हमारे चोर कर रोग
ले हम देख नहें॥ चड॥ अहो चौकि दार उ स चोर को वाध क
स्ते आउ॥ चौकि॥ अहो माहाराज अवस्थ॥ चौकि लिख
क भारि॥ अहो जन वृन्द अव हम यह चोर को वाध कर ले
जाउंगे॥ विधे भाव॥ जो नाह वने येने॥ चौकि॥ अहो माह
राज यह धन मान सौहेन चोर पकड के आये पुरुचैन
जर कारिये॥ चड॥ अहो चौकि दार यह चोर को मार दार क

रश्मी खलाबंधनसों कारागार मे धरिये ॥ चौकि ॥ अहो
माहराज अवस्य ॥ जव सति हाये ॥ चौकि ॥ अहो त्वह
कारतु मय हा आइये ॥ थन त्वहा कारवा ॥ भांषी ॥ म
॥ कौ ॥ अहो चौकि दारक्या आजा होत है ॥ चौकि ॥ अहो
त्वहा कारय ह चौर को सिंघला बंधन करिये ॥ कौ ॥ अ
हो चौकि दार अवस्य ॥ थन कौ या रत्ना लमाल को नेवलं
कय भाव ॥ कौ ॥ अहो चौकि दार शृंखला बंधन हो गइ

अवहमजानहैं॥चौकि॥अहोस्वाहाकारयहमुजडि
लियेकरजाह॥कौ॥अहोचौकिदारअवस्य॥दामबिये
भांखिं॥कौलिखय॥कौ॥अहोजननवृन्दअवहमअफना
मंदिलमोजानहैं॥निपं॥प्रकोडं॥दिको॥कौ॥अहोज
नवृन्दसिधुजानहैं॥उवं॥चौकि॥अहोचौरयहकारागा
रमेरहिये॥पुनवसतये॥चड॥अश्रयादिगणसबय
हचौकीदारकोसमाचारबुझिकेचौरकोमातबुझिकेय

कौदुकागटकेसर्वेचतुर्थअंक॥धनपंचपनादिने॥राग॥भि
षाह॥चौ॥गुरुगणनायकनंगलकीअ॥गुरुगणनायकसिद्धि

रको॥यकनने॥१॥असह्यनरासहजोकिपा॥२॥

रुद्राय नमः ॥ १ ॥ अमरं लतां कलौ किकिया ल॥ ८ ॥
 वीर्यं प्रसाहं देवना नमः ॥ २ ॥

हिरनहं सर्वं ॥ अहो माहाराज अवस्परहिये ॥ परिः
 क्षेपं डवं ॥ लु ६ ॥ ३ ॥ इति श्री स्कंद पुराणो रेवारं देस न
 नारायण पारत्नाने ॥ ४ ॥ धन माजं नी उपरि क्षपं पिव ॥
 माहाजं नी ॥ अइ पुत्रिय रा भिक्षा द्य सौ श्री सन्य नाराय
 रा को वन करौगे ॥ कला वनि ॥ अइ माना य ह सरा नाम
 सोह मा रा पुरुष को नय व न इ कर करिये ॥ निहं दं ह्य
 मध्यो विश्राम ॥ धनं पां विभां रिं ॥ माहाजं नी ॥ अइ पुत्रि

१

८

परिक्रमाकरिये ॥ कलावति ॥ अश्माना अवस्य करि
 ये ॥ निस्रंदं वुन मे ॥ राग ॥ श्री ॥ ॥ श्लोक ह्यायाग
 ॥ निस्रं नं भासा ॥ अहो श्री त्रैलोक्य नाथ सत्य नाराय
 णा हमारि पुरुष देसांतर व्यपार कर शोको गया था उस्को
 निर्विघ्न पूर्व कह मारि साथ मिलने का वर दी जे आफ का
 वरणा मे कोटि २ सा शंग प्रणाम ॥ माहाजननी ॥ अई प
 वि कलावति अवहम सत्य नारायण का आगे जागर

मकरिके यहिरहन हैं ॥ कलावति ॥ अईमाना अवस्य
॥ परिछिपंडव ॥ तु १ ॥ थन चड के तु ५ परिछिपं पिव ॥
चड के तु ॥ अई प्रियादिगशा सब अवहम सयन काल
भयो सयन करन हैं ॥ सर्वे ॥ अहो मां हाराज अवस्य स
यन की ज्ये ॥ सयन या कभाव ॥ चड के तु दं हहाय ॥ चड
के तु ॥ आश्चर्य आश्चर्य आज हमारि स्वपना मे जो नभा
फने चोर कह के श्रंखला बंधन कर के कारागार मे रवा

थाउस्कोकत्तुंखलाबंधनसेछुनाईयोउस्काजित्ता
धनमातलियाथाउस्कादोवरदेदालोकत्तुइतनानुम्
नेनाहिकियानोनुमाराजितताधनराज्यहैउससंवह
मनेनासकरिदंगेऐसाहमारास्वप्रभयेथेसोवान्म
विलोकसेसंभासनकरिकेमाहाजनकोछुनाइगे॥प
त्ताखंतिहायबिश्राम॥सर्वेहोतनंचाकभाव॥चउ॥अ
होमंत्रिकारागारमेरहनेवातामाहाजनकोगारागार

से छुनाई के ले जाह ॥ मंत्रि ॥ अहो माहाराज अवस्य ॥ मं
त्रि ॥ अहो चौ कि दार माहाराज नू को श्रृंखला बंधन से छुग
ई के ले जाह ॥ चौ कि ॥ अहो मंत्रि अवस्य ॥ चौ कि ॥ अहो
महाराज नू म को श्रृंखला बंधन से छुग ई के माहाराज
को पास ले जाउगे उति व उति व ॥ थन माहाराज नया ला
हा जो नाथ ने ॥ पत्ता खंरु हा ये मध्ये ॥ चौ कि ॥ अहो माह
राज माहाराज नू को श्रृंखला बंधन से छुनाई कर ले आए

चत्र चौ कि दार रु हा ये को स तु को व छति पं ने वल खे ने भां द व लं वं उ

॥चंद्र॥अहोचौकिदरअवस्य॥नुमयाहाआइकर
हिके॥चौकि॥अहोमाहाराजअवस्य॥पत्ताखहहाय
नापंविश्राम॥चंद्र॥अहोचौकिदरनाउवोलाइकेमह
जन्कोक्षोरकराइकेयाहंस्याइये॥माहजनपत्ताखं
हहाये॥जवसविश्राम॥चौकिदर॥अहोनाउजाहा
आइये॥नौछनिपंवर॥नौ॥अहोसाहेवचौकिदरहम
कोक्यावासेवोलाया॥चौकिदर॥अहोनाउमाहज

न को क्षौर कर ने वास्ते वो लाया क्षौर कराइये ॥ नौ ॥ अ
हो साहव अवस्य ॥ नौ पत्ता खंज वस साये ॥ अहो माहा
जन माहा राजा काहु कुम से आफ को क्षौर करौगे नया
र होये ॥ माहाजन ॥ अहो नाउ अवस्य ॥ धन सरवाय भा
खिं ॥ नौ ॥ अहो महाजन आफ को क्षौर हो चुका हमारै
उरा मूह म जान हैं ॥ माहाजन ॥ अहो नाउ मुजरिते के
जारु ॥ नौ ॥ अहो माहाजन अवस्य ॥ खर्च विये भांखिं ॥

थन नौ या रत्ना लमाल को ॥ नौ ॥ अ हो जन वन्द अवह
म आफना मंदित मो जान है ॥ प्र को डं ॥ धि को ॥ नौ ॥ अ
हो जन वन्द सिष जान है ॥ न ड वं ॥ च ड ॥ अ हो मा हा ज
न ॥ मा हा जन दं प ला र वं ह हा ये ॥ म हा जन ॥ अ हो म हा
रा ज क्पा रु कु म हो न है ॥ च ड ॥ अ हो मा हा जन य ह ड व
र ध न दौ ल न ले के आ फ ना मंदित जा ह ॥ मा हा जं न ॥ अ
हो मा हा रा ज अव स्य ॥ थ न दा म वि य भां रि वं ॥ मा हा जं

॥ अहो माहाराज अवयह धंदौ लथले के हूम जान हें ह
मारो प्रणाम ॥ लिखक माहाजं ॥ अहो सेवकर ॥ धन से
वकर दंह हाये ॥ सेव ॥ अहो साहुकार माहाजं ॥ अहो से
वकर अवयह धन दौ लथले के अफना मंदित जाये च
लिये ॥ सेवकर ॥ अहो साहुकार अवस्य जाइये ॥ लिख
द वलं वं ॥ चड ॥ अइ पुरे नुम लोक अंन पूर जाइ के रहि
ये ॥ पूर्ण चडरानि ॥ अहो माहाराज अवस्य हमारी प्रणाम

माहा
जं

मू॥ पूर्णारानि सषि नि संदं ह हयये॥ पूर्णारानि॥ अश्रु स
षि लोक अवराजा का रुकुं म से अंत पूर मो जाये चलि
ये॥ सषि॥ अश्रु महारानी अवस्था विजे की जे॥ थन पूर्ण
रानि अंत पूर वं मे॥ राग॥ गौरि॥ परि मां॥ अंत पूर मे से
जाये चलिये॥ मतर स भरि २ अवह म जाये॥ १॥ भूप
नि नृप गुरा सव जन गावे॥ हरि गुरा भजि कर रनि न्य
ह म धावे॥ २॥ प्र कों डं॥ द्वि कों॥ सषि॥ अश्रु मा हारानि

सिधु विजे कीजे ॥ ~~पूरा~~ ॥ अइसषी अवस्य जाइ चलि
ये ॥ इव ॥ चउ केतु ॥ अहो मं विगरा सब अवहमः
लो क अश्वा रुढ करिके अरण्य मो जाय चलिये ॥ स
र्वे ॥ अहो माराज चउ केतु अवस्य विजे कीजे ॥ थन
गुमारा तिपदि मास प्रकों ॥ उं ॥ दिको ॥ अहो राज मि
धु विजे कीजे ॥ चउ ॥ अहो मं विगरा सब अवस्य जाये वसि
के ॥ सर्वे इवे ॥ लु ॥ माहाजं नी उषरि पिव वुन समेन ॥ थन

वंजानि संत्रति पंताइ को ॥ प्रको ॥ अहो भाइ लोक भव ह
म माहाजंती के पास जात हैं ॥ वंजा ॥ अहो नाइ को अवस्य
जाये चलिये ॥ द्विकों ॥ अहो नाइ को सिध जाये चलिये ॥
नाइ को ॥ अहो भाइ अवस्य जाये चलिये ॥ मध्ये स्वयं
॥ वंजा ॥ अहो माहाजंती तु मारा पुरुष माहाजंती कर
सामे आये धनु मारी बत पुराण करि के लेने जाहु भव
हुम जात हे ॥ माहाजंती ॥ अहो नाइ के कुठ मन बोले ॥

नाइको॥ अहो माहाजंनियहवानपकाहं हमने इसे
देषाथाफिकिमत्करिये॥ नाइकेलिखकनाइको॥ अ
होभाइअवहमलोकअफनावासजायेचलिये॥ वं
जा॥ अहोनाइकेअवस्यजायेचलिये॥ छनिपनंवं॥
माहाजंती॥ अइपुत्रियहवनजतदिकरकेहामारापु
रुषलोकदेषनजायेचलिये॥ कत्यावति॥ अइमा
अवस्यजाइये॥ निहंदं॥ रवतंवं॥ तु३॥ थनमाहाजं

वनियं॥ प्रकोटिकोडं॥ मध्ये॥ माहाजं॥ अहो सेवकर
वहमलोकगंगाके निकत आये यह चेया हासन के वि
श्राम करत है॥ सेव॥ अहो साहकार अवस्य कीजे॥ सर्व
विश्राम॥ माहाजं॥ अहो सेवकर यह गंगामे ना उधेला
उने के वास्ते माफिलोक वोलाइये॥ सेवकर॥ अहो मा
हाजन अवस्य॥ थन सेवदं॥ पत्तारखं हाये॥ सेव॥ अ
हो माफिनुमलोक आइये॥ लिहाये ना पं विश्राम॥ थ

नमाजिबं मेरा गागा आसा वरिगा प्रार से जाये चलिये
 हो उन भाइ मिलि ॥ रुटिनि जाये हम ना डं पार करण
 रसे रसे आज ॥ १ ॥ नृपराज पृथिवीर विक्रम साहदेव
 ॥ जलदि जाये भाइ गंगा पार करण को बोलाये रे हो ॥
 २ ॥ प्रकों ॥ माजि ॥ अहो भाइ नरिवाह क माहाजं के पास
 जाये चलिये ॥ नरिवाह ॥ अहो भाइ माजि अवस्य जाये
 चलिये ॥ द्विकों ॥ नरिवाह ॥ अहो भाइ माजि सिधु ज

येचलिये॥माझि॥अहोमाइतरिवाहकअवस्यजा
येचलिये॥मध्ये॥स्वये॥माझिनिस्त्रं॥अहोसाहका
रमाहाजनहमारोप्रणाम्क्यावास्तेवोलाया॥सेवक
॥अहोमाझिलोकनाडुनोनयारकरिकेहमलोक
पारकराइदेहो॥माझिनिस्त्रं॥अहोसेवकरअवस्य
॥धननाडवेगतयारयाय॥माझि॥अहोसेवकरना
उनयारभयोविराजीये॥सेव॥अहोतरिवाहकअ

उत्तयारभयो विराजीये ॥ **सेव** ॥ अहो तारवाहक

वस्य इहा आइके रहिये ॥ **माजि** ॥ अहो सेवकर अव
स्य ॥ **नापं विश्राम** ॥ **सेवकर** ॥ अहो सोइ कारयहना
उत्तयारभयो ॥ **साहु** ॥ अहो जामानु ॥ **धनमाहाजं कुमा**
रनि संदं हहाय ॥ **माहाजं** ॥ अहो जामानु यहना उमे यह
धनमाल धरन हैं ॥ **कुमार** ॥ अहो स्वसुर अवस्य ॥ **निह**
सेनं नाउस धनमाल नये भावखिं ॥ **धनफकीर वभाव**
पहखिं ॥ **मध्वे** ॥ **स्वयभाव** ॥ **फकिर** ॥ अहो साहु लोक

हनाउमेक्याचिजधररहोकहिये॥माहाजं॥अहो
दंदिवावायहनाउपरहमनेवनसौलेआयाज्याउ
पठकरधरायाहोकुहुनाहि॥दंडि॥अहोमाहाजन
साकहानैसाहोइजाहअवहमवनांतरमोरहिकेदेषः
नहें॥पलाषंहहायेइशानकोनसफेकनुक॥थनमाहा
जंकुमारनिहंहहाये॥माहाजं॥अहोकुमारजामानुदे
षोश्यहनाउपरधराधनमालसवपठकरहोरहाअ

वहमारोक्पागानिहरिहरि॥माहाजंमोसुकषिं॥कुमार
॥अहोस्वसुरपिनाउनिष॥कुमारनताहाजोनाथ
नेषिं॥धनमाहाजंदं॥कुमार॥अहोस्वसुरपिनायः
हअर्थभइक्याकरो॥माहाजं॥अहोकुमारदेरतो२को
नापापीनेसरापकियाहोगायहधनमालविनाक्या
गानि॥वाकवालाभोकसुय॥षिं॥कुमार॥अहोस्वसु
रपिनाधीर॥कुमार॥अहोस्वसुरपिनाववषन

दंडिने जैसा कहा ऐसा भया व दंडिदैव हैं उसको भज
न कर ॥ साहु ॥ अहो कुमार जा मानु अवह मन्तो कर्त दं
डिक का हां हेन लास करोंगे ॥ कुमार ॥ अहो स्वसुरपि
ना अवस्य करिये ॥ पलाषं ज व सहाय ॥ माहाजं ॥ अ
हो कुमार यह जगामे देखत नाहि अव रजगा मो देख
त हैं ॥ कुमार ॥ अहो स्वसुरपिना अवस्य देखन जा
ये चित्तिये ॥ पूर्व हाय पलाषं ॥ माहाजं ॥ अहो कुमा

रयहजगामोदेखतहो **कुमार** ॥ अहोस्यतुरपिताअवस्यओ
जिये ॥ **स्वयेभाव** ॥ **माहज** ॥ अहोकुमारजामातुयहजगामो
नाहिमिलेअवरजगामोदेखतजायेबलिये ॥ **कुमार** ॥ अहोस्य
तुरपिताअवस्यबिलये ॥ **पलाखंदेपाहाये** ॥ **माहज** ॥ अहोकु
मारजामातुयहजगामोदेखतहं ॥ **कुमार** ॥ अहोस्यतुरपिता
अवस्यदेखतहं ॥ **स्वयभावविं** ॥ **धनदंडिदंधनहहायेम**
धे ॥ **माजंकुमारसेवकर** ॥ अहोदंडिवावातुमारोचरण

कमेंलें मलामोदंडवत् प्रणाम हो ॥ **देडि ॥ डहा ॥** हे माहाजन सहे
वो लोसाहु माहाजन डुनो क्या वा स्त धरता रहे हो ॥ कहिये
तेरे मन की बात हम करें क्या बात हो ॥ **माहाज ॥ डहा ॥** हे
या वा जि हो अपराध हमारे क्षमा कर दीजिये मालुम नहि
आफर को साच ॥ विधाता ओपे देवहि ओपे रूपा कर द
याधारि साच ॥ **देडि ॥ डहा ॥** हे माहाजन सहे हम क्या जानि
हम क्या कहेंगे हम क्या करे बात ॥ अब क्या कहें अब क्या

करुं हम कुहु नहि जाने हम यात ॥ **अमार ॥ दुहा ॥** हे प्रभु
मिंहो हमारो विनति हमारो भगति हमारो कारजो रिआज
॥ करुणा सागर दया कर स्वाप्री सरण चरण मे आज ॥ **दंडे**
इहा ॥ हे साहु लोक होतु मारामन मे तुमारा क्या भइ तुमारा म
न की बात ॥ कहिये साहु कहि यात अब न करे विबाद ॥ **अमा**
र ॥ इहा ॥ हे गुरु बाबा हो आपर को माया आपर को मोह अपर
ने कियो जगत पाल ॥ आपर हिंदे व दया कर साररुणा क

रूपानिधे ॥ दंडि ॥ ७५ ॥ हे कुमार हो हम नहि जाने हम नहि पाले
हम हे जोगि रूप फिरता ॥ अवाहि तेने कहि करवात नहि जाने हम अं
त ॥ माहाजं ॥ हे प्रनुखा मि हो आफ का रुकु मे संधन मेरा सब होगा इ
पट कर जाउ ॥ आफ का कच न सं रुकु म आफ का धत ला चकरि जे धन
माला ॥ अहो गुरु नाथ वावा जि आफ को मालु म नहि न इ मेरी अप
राध क्षमा करी धन प्रशान कर दीजे अब हम सो व्र करत हैं ॥ शोक ॥
त्यं माया मोहि ता सर्व उला विषु त्व मे वाहि ॥ क्षेमतां मे परा धं वरु

पांऊरुदयानिधे ॥ अहोगुरुनाथ आपर कोहमने छुठवोलेके
अपराधकि याथा सोपराध क्षमा करी धननाउ पर दया प्रशंन क-
रिदिजे ॥ **दंडि ॥** आहो माहाजन तेर भक्ति सोहम संतुष्ट आयेतु
मारा इक्षा परी होइ जाह अवहम अंत ध्या न होत हे ॥ **माहाजंकु**
मार सेवकर ॥ अहोगुरु वावाहमारे प्रणाम ॥ **माहाजं ३ संलि**
हाये ॥ दंडि ॥ अहोजन रुन्द अबहम अंत ध्या न होत हे ॥ **इति पत्रं**
यं ॥ धनमाजंकु मार सेवकर ननाउ स्वये भाव ॥ **माहाजं ॥** अहो
कुमार जामातु सेवकर यहुना उपर धन माल सब जस्ता को तस्ता

नये अवयह नाउ मेरहि के पार करुगी ॥ कुमार सेवकर ॥ अहो च
साउ कार अवस्य ॥ माहाजं ॥ अहो सेवकर माझिले करुहना
उमेरहि के पार करी ॥ माझि ॥ अहो साउ कार अवस्य ॥ ५ हं द
माहाजं सेवकर छगल नाउ, कुमार छगल नाउं सचोत्त ॥ मा
झि ॥ अहो भाइ यह दुन नाउं हं सम्भार सों चला इदेह ॥ माझि ॥
अहो भाइ अवस्य चलाउं गे ॥ नाउं ह्यो के पहिं ॥ जवत ॥ माझि ॥
अहो भाइ यह गंगा मे जाहार वड गया शरा भर नाउं को रोका क

रे ॥ माफि ॥ अहो भाइ अवस्य ॥ नाउ दिह्ये ॥ थन माहाजं नी कला
वति वतिपं ॥ प्रकोउं दिह्ये ॥ मध्ये ॥ माहाजनी ॥ अइपुत्रिगं
गाको नि कट आये पडु चे क्षराये कवि आम कर तेहं ॥ कलावति
अइ पाता अवस्य ॥ निह्ये वि आम ॥ माफि ॥ अहो भाइ अवस्य गंगा के
जे हार डिटि गइ अवताउ चला इये ॥ माफि ॥ अहो भाइ अवस्य
थन ताउ ह्यो के पहिं ॥ इजान सा दिह्ये ॥ माहाजं नि ॥ अइपुत्री
निह्ये दं माहाजं नि ॥ अइपुत्रि यह गंगा मामे ताउ चलाया =

दखन जाये बलि ये ॥ कहलु ॥ अइ माता अवस्य बलि ये ॥
पलायं हहाये ॥ माह जंनि कलावति ॥ स्वये ना वधिं ॥ अहे
स्वामि हमारी प्रणाम ॥ माह जंनि न माह जं या लाहा जो ना
को काये लि हारे माणंद ॥ लाउलि काये माह जं या ॥ थन कु
माख्या नाउ अतं दुचे जव ॥ कलावति ॥ अइ माता देखो देखो
मेरी स्वामि को नाउ दुविगाइ हरि हरि ॥ थन कलावति बाक उ
लाभो क सुये ॥ माह जंनि ॥ अइ पुत्रि अवहमारि पुत्रि को

ऐसी गति अवह मारी क्या गति हरी हरि ॥ चाक उलाव जो कस
क ॥ माहाज ॥ अहो आश्चर्य मेरे जा मातु को ऐसी गति हरी हरि ॥
जो कस क ॥ सेव कर दंड हाये ॥ सेवक ॥ अहो साह कार उठ कर देखिय
लाहा जो ना थने ॥ माहाज दं ॥ माहाज ॥ अहो सेव कर विना अपरा
ध मे जा मातु दुविगयो क्या अवष्टा भ ॥ सेवक ॥ अहो माहाजन
क्या करे देव का गति ऐसी भई पर मे अर को भजन करि के धीर
ज करियो ॥ माहाज ॥ अहो सेव कर यो अवष्टा का हा सो आई

ॐ नमो नारायणाय ॥ का दोष से भये कि क्य जाये ॥ सेव कर ॥
अहो माहाजन नारायण नाम सप्त जे ॥ माहाजा ॥ अइ प्ये
पुत्री कलावति ऐसी विद्योग प्रक रिये उथ कर दो लो ॥ मा
हाजन नारायण लो ॥ माहाजा ॥ नाथ ते त्रिहं दं ॥ माहाजन से
व कर त्रिहं पलाखं लिखिले ॥ माहाजा ॥ अहो सेव कर अव
नुक्ति कर शोको विश्राम कर न हें ॥ सेव ॥ अहो माहुकार अ
वस्य करिये ॥ विश्राम ॥ माहाजनी ॥ इहा ॥ हे पुत्रि हो सुनि

ये हो कलावति मन की विछो डछो डिये ताप सो क॥ कर्म
हि अफने ऐसि भइ गइ हमारा भर कर रहो भोग॥ कलाव
ति॥ उहा॥ हे विधाना हो मेरी करम कुदिन भयो के सा भै
करम अभाग॥ अगे पाया पुरुष को दरसन पीक्षे जल मे
डुवि गइ॥ माहाजनी॥ उहा॥ हे कलावति हो सुनिले क
लावति करम केवान पूर्व जनम की अभाग॥ अवाहिने
जो दुर्गति भोग हमने पास ने रखीव॥ कलावति॥ हे हो दे

वहोजोनादिनसेंविवाहमैगैजोनादिनसो तमअभागो॥
अवहिमैनेपुरुषकोदासवगहिमितेपुरुषकिसंग॥मा
हाजंनि॥ हेपुत्रिहोकोनेचिंताकोनेउखकोनेकरसोक॥
धंदाचिंछोडकरभजोनारायणामनकरो॥कलावनि॥
हेविधानाहोकोनेउपायकोनेसरीरकोनासोभाभइग
इ॥अवहिन्येनुयहशरीरहायप्रानहायेप्राण॥माहा
जं॥अइपुत्रिनुमधंदासनकरियेहमसत्यनारांभजोः

अहो सत्यनारायणानुमारो चरणकमलमोकोटिरह
मारो प्रणामरक्षा करदीजे ॥ **थन आकासदेवि वरुणा के**
॥ मधो देवि ॥ अइ कलावतिनुम के साभुत गइ सत्यना
रायण को प्रसाद छोकर आइने सें तेरी ऐसे आपन भ
यो प्रसाद ले के आह ॥ **कला ॥** अरीरी जननी अवस्थ
मारो प्रणाम ॥ **लिवि के पलाय ॥ माहाजनी ॥** अइ प्र
क्षणा येक विश्राम करन हैं ॥ **कला ॥** अइ माना अवस्थ

विश्रामा॥ देवि॥ अहोजनवृन्द अवहम अंतरधान
 होनहें॥ देवि॥ मे॥ राग॥ मारश्री॥ अ॥ नारायणो दे
 विनामहम जायकरुपदेश॥ हृषिजन उद्धारण क
 रेकरजाये॥ १॥ मनरसभरी के सुषवर दिय के जाये
 ॥ निजगण सवमिलि निजकुल आसन नारायणो
 हो॥ २॥ प्रकोटं॥ दिको॥ देवि॥ अहोजनवृन्द अवहम
 सिध जानहें॥ देवि उवं॥ माहाजनी॥ अशुपुत्रि आका

ग न

सवानिसेहमकोकहासत्यनारायणकोप्रसादः
न्यागकियाकाफलसोवियेयाकरकेहुकुगभया
फेरवनकराकोजायेचलिये॥ कलावति॥ अशु
मानाअवस्यजाइये॥ छनियनवं॥ माहाजं॥ अहोमे
वकरअवहमलोकलीलावतिकलावतिकोसमा
चारबुझिकस्यहिरहनहैं॥ सेवकर॥ अहोसाहुका
रअवस्यगहिये॥

रजवस्वरहये॥ नाइकेस्मेतलैवपरिहेपदुदं॥ लु ॥

४॥ आरनिमे॥ राग॥ गौरि॥ चो॥ करेहमआरनिह
रिकेचरणामे॥ कोटिविनतिनृटेश्वरगुरुकेभगनि
सोकरेहमसिद्धिवरदीजे॥ १॥ भगनिसोकरे॥ ५॥

पृथिवीरविक्रमनरपतिगायेरे॥ हरिहरगुरुजिय
सुपनिगुजेश्वरीवागेश्वरिभावेसीजेआरनिहो॥ भ
गनिसो॥ ॥ इतिश्रीस्कण्डपुराणोरेवारवरादेशी

सत्यनागयशापाष्यानेकोदुकनाटकेसर्वपंतमो

सत्यनारायणपाषाणकोटिकनोटकसंवत्सरे

कः॥ अथषष्ठेनादिमे॥ सग॥ दोरि॥ ५॥

भजोभाईनाटेश्वरनित्यनित्यगाडइ॥ नंदिभृंदि
गरापातिहनुभेखभावर॥ १॥ नरपातिपृथिवी
रविक्रमसाह॥ इगादेविदछिनकालिवज्रजोगि
नीभवानी॥ २॥ थनमाहाजनीकलावतिवतिपे॥
प्रकोण्ड॥ द्विकों॥ कलावति॥ अइमातासिधुजाइये

भजोभाईनाटेश्वर

॥ अथसप्तमेनादिमे॥ सग॥ दोरि॥ ५॥

माहाजंती॥ अइ पुत्रि अवस्य जाये चलि॥ मध्ये॥ ॥
॥ माहाजंती॥ अइ पुत्रि अवहमारिमकानमोआये
पहुचै क्षेरायेक विश्राम करन है॥ कलावनि॥ अ
इमाना अवस्य करिये॥ विश्राम॥ माहाजंती॥ अइ पु
त्रि आकासवा निभया जैसा श्री सत्यनारायण को
बुन करणो को जाये चलिये॥ कलावनि॥ अइ मा
नाय हरसरजामलिये के चलिये॥ निहं दं हहाये वि
श्राम॥ माहाजंती॥ अइ पुत्रि यह सरजाम सो श्री

सत्यनारायणकावनकरनेहैं॥कलावनि॥अश्मा
नाअवस्यकरिये॥थनवनयाकभांषिं॥माहाजं
नि॥अइपुत्रिअवपरिक्रमाकरिये॥कलावनि॥अ
श्मानाअवस्यकरिजे॥थनपरिक्रमायाकहथुमे
॥सय॥श्री॥ ॥निहंनंश्रीकहायागुं॥निहं
नं॥अहोत्रैलोक्यनाथश्रीसत्यनारायणानुमारोच
रणकमलमोकोटिस्साखांगप्रणाम्॥कलावनि

॥ अहो वैलोकनाथ श्री सत्पना राखै राह मारी अप
राध क्षमा करी मेरि पतिको जी वरदा करी प्रशंन वरदान
दीजे ॥ **माहाजंती ॥** अइ पुत्रिय रूप सादषाये के अभिशे
ष चन्दन लगाइ के पतितो क को प्रसाद ले कर नदी तीर
मो जाये चलिये ॥ **कलावति ॥** अइ माना अवस्प जाइये
॥ **निहंदं ॥** लिहाये ॥ **माहाजंती ॥** कलावति भासांडं ॥
(छुति पनवं) ॥ थन माहाजंति बकरना ५ समे नू ५ पारि

दस्ता

पित्रा॥ थनमाहाजंनिकलावनिवृद्धनिपनं॥ मध्ये॥ मा
हाजंनी॥ अहोस्वामिश्रीसत्यनारायणाकोपूजाकरिप्रः
सादषाडकेआश्वपुंवेयहप्रसारलीजे॥ माहाजंसेवक
रदं॥ माहाजं॥ अश्वपुत्रिअवस्यप्रसाददेहो॥ थनप्रसा
दवियेभाव॥ माहाजं॥ अश्वपुयेपुत्रिलोकअवहमलो
कगंगामेदेषनजायेचरियो॥ सर्वे॥ अहोसाहकाअ
वस्यनाश्ये॥ थनपताखंहहाये॥ थनमाद्रिनिहंका